अगस्त , 2021 वर्ष : 42 अंक : 8
www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग का लद्दाख दौरा

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

तिब्बत देश

अगस्त, 2021 वर्ष : 42 अंक : 8

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित

तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी , जिगमे सुलट्रिम

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन पलजोर , तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
जामयंग छोपेल, छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

परम पावन दलाई लामा ऑनलाइन प्रवचन के दौरान

समाचार -

करुणा और अहिंसा 1

तिब्बती राजनीतिक कैदी ने सजा पूरी की, लेकिन रिहाई की कोई खबर नहीं ल्हासा के एक अनाथालय में प्रबंधक और शिक्षक बांगरी रिनपोछे ने 'अलगाववाद' के आरोप में २० साल तक जेल की सजा काटी। 2

गांसु में तिब्बती मठ को बंद करने को मजबूर किया; भिक्षुओं और भिक्षुणियों से चीवर उतरवा लिए गए 3

चीनी प्रचार व्याख्यान में भाग लेने में विफलता के लिए सिचुआन में तिब्बती व्यक्ति गिरफ्तार १९ वर्षीय शेरब दोरजे ने तिब्बती स्कूली बच्चों को उनकी अपनी भाषा में पढ़ाने की अनुमति देने के लिए भी अधिकारियों के पास याचिका दायर की थी। 4

ड्ज़ा वोन्पो में लगभग ६० तिब्बतियों को परम पावन दलाई लामा के चित्र रखने पर गिरफ्तार किया गया 5

सीटीए ने भारत का ७५वां स्वतंत्रता दिवस मनाया 6

सिक्योंग ने लेह में स्थानीय लद्दाखी नेताओं और गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात की 7

सिक्योंग ने शहीद और तिब्बती सैनिक न्यिमा तेनजिंग की स्मारक प्रतिमा का उद्घाटन किया 8

केवल लोगों का विवेक चीनी कठोर नीति की पूर्ण अस्वीकृति का कारण बन सकता है 9

भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों की नागपुर में बैठक 10

समाचार -

तिब्बत पर निरंतर समर्थन के लिए धर्मशाला के तिब्बतियों ने स्थानीय गणमान्य नागरिकों को धन्यवाद दिया 11

लंबे समय से तिब्बत समर्थक रहे श्री श्याम गंभीर का तिब्बती गैर सरकारी संगठनों और मजनुं का टीला व बुद्ध विहार के एसोसिएशन ने अभिनंदन किया 12

भारत-तिब्बत मैत्री संघ ने 'परम पावन दलाई लामा का भारत को योगदान' विषय पर वेबिनार किया 13

उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले में तिब्बती आंदोलन को मजबूत करने के लिए कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया का अभियान 14

ओओटी ताइवान के प्रतिनिधि ने ताइवान के पूर्व राष्ट्रपति चेन शुई बियान से मुलाकात की 15

ऑस्ट्रेलियाई सरकार ग्लोबल मैग्निट्स्की कानून की तरह एक नया प्रतिबंध कानून लाएगी 16

तिब्बती प्रतिनिधि डॉ. आर्य ने जापानी संसदीय समूहों को तिब्बत पर रिपोर्ट सौंपी 17

चीन में २०२२ के शीतकालीन ओलंपिक के खिलाफ स्विट्जरलैंड में साइकिल रैली 18

भारत-अमेरिकी तिब्बत नीति विकसित हो रही है, ब्लिंकेन की बैठक इसका सबूत है 19

तिब्बत में चीन की नई नस्लीय चाल: विवाह संबंधों से एकीकरण?? 20

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत -तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट
www.indiatibet.net
Email: indiatibet7@gmail.com

विचार
क्लाउडी आरपी

अपनी बात

अफगानिस्तान में साजिशपूर्ण चीनी घुसपैठ से विश्वशांति को खतरा

भारत स्थित तिब्बती बस्तियों में भारतीय स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2021 को आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों से भारत एवं तिब्बत के संबंधों की मजबूती और बढ़ी है। तिब्बती समुदाय प्रतिवर्ष इस अवसर पर उत्साह, उल्लास और सम्मान के साथ भारतीय तिरंगा फहराता है; राष्ट्रगान गाता है, भारत की जयकार करता है तथा भारतीय विकास में सहभागी बनने की निष्ठापूर्वक शपथ लेता है। तिब्बती धर्मगुरु परमपावन दलाई लामा द्वारा भारत को अपना "दूसरा घर" बताने के पीछे भी यही सोच है। भारतीय और तिब्बती बेरोकटोक तिब्बत एवं भारत स्थित धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों की यात्रायें करते थे। भारत एवं तिब्बत के बीच ऐसा व्यवहार सैकड़ें वर्षों से चल रहा था लेकिन 1959 में तिब्बत पर चीन के अवैध आधिपत्य के साथ ही इसमें रुकावट आ गई। फिर भी तिब्बती समुदाय द्वारा भारतीय राष्ट्रीय पर्वों का भारतीयों के समान ही आयोजन किये जाने से यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि तिब्बत समस्या का समाधान होते ही फिर से भारत एवं तिब्बत के बीच बेरोकटोक आवाजाही प्रारंभ हो जायेगी।

इसी 15 अगस्त को निर्वासित तिब्बत सरकार द्वारा धर्मशाला में आयोजित भारतीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में भारतीयों को बधाई तथा शुभकामना दी गई और विश्वास व्यक्त किया गया कि शांतिपूर्ण एवं अहिंसक तिब्बती संघर्ष में भारतीय समाज और सरकार का सहयोग जारी रहेगा। तिब्बत के नवनिर्वाचित सिक्योंग (राष्ट्राध्यक्ष)पेंपा त्सेरिंग अपने इस विश्वास को सदैव प्रकट करते हैं। उन्होंने अपनी पहली आधिकारिक यात्रा लद्दाख स्थित तिब्बती बस्तियों की की और घुमन्तू लोगों से भी मिले। उनकी यात्रा से तिब्बतियों का मनोबल बढ़ा है और तिब्बती संघर्ष को नई ऊर्जा मिली है।

निर्वासित तिब्बत सरकार, जो कि लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित सरकार है, की रचनात्मक सक्रीयता अभिनंदन योग्य है। चीन द्वारा जानबूझकर पूरी दुनिया में फैलाई गई कोरोना महामारी की तीसरी लहर की संभावना से पूरी मानवता भयभीत है। इससे बचाव हेतु सभी देश प्रयास कर रहे हैं। इसी दृष्टि से केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन द्वारा गठित कोविड 19 टास्क फोर्स ने अरुणाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, सिक्किम एवं मेघालय स्थित तिब्बती बस्तियों का प्रवास किया है। कोरोना से बचाव हेतु किये जा रहे उपायों की समीक्षा की गई तथा अन्य सभी आवश्यक नियमों के पालन को सुनिश्चित किया गया।

लेकिन कोरोना महामारी फैलानी वाली चीन सरकार का पूरा ध्यान अपनी दमनकारी तिब्बत नीति को और भी दमनकारी बनाने पर है। तिब्बत स्थित रावाड्Ûपो क्षेत्र से उसने हाल कई तिब्बतियों की अवैध गिरफ्तारी की है। विस्तारवादी चीन सरकार का आरोप है कि वे निर्वासित तिब्बतियों के संपर्क में थे तथा दलाई लामा की तस्वीरें रख रहे थे। उपनिवेशवादी चीन सरकार द्वारा तिब्बत में मानवाधिकारों, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा अन्तरराष्ट्रीय कानूनों का उल्लंधन व्यापक पैमाने पर जारी है। उसके अनुसार दलाई लामा आतंककारी और विघटनकारी हैं। चीन की दलाई लामा संबंधी गलत सोच के बावजूद तिब्बतियों में तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर दलाई लामा के प्रति श्रद्धा-निष्ठा का बढ़ते जाना स्वागत योग्य है। दलाई लामा ने तिब्बत के प्रश्न को अंतरराष्ट्रीय प्रश्न बना दिया है। चीन बेनकाब हो चुका है। विश्व जनमत एवं सहयोगपूर्ण समर्थन तिब्बत के पक्ष में बढ़ने से चीन बौखलाहट में तिब्बत के अंदर क्रूरतापूर्ण व्यवहार कर रहा है।

दलाई लामा के प्रति चीन सरकार को अपना विचार बदलना चाहिये। दलाई लामा ने इस अगस्त माह में भी अपने ऑनलाइन प्रवचन में प्राचीन नालंदा परंपरा में निहित शांति, मैत्री, करुणा तथा अहिंसा जैसे मानवीय मूल्यों को ही मजबूत करने की सलाह दी है। उनके दिल में आक्रमणकारी उपनिवेशवादी चीन सरकार के लिये भी करुणा है। वे तो तिब्बत के लिये सिर्फ " वास्ततिक स्वायŸाता" की मांग कर रहे हैं। चीन अपने संविधान तथा राष्ट्रीयता संबंधी कानून के अनुरुप चीन सरकार अपने पास प्रतिरक्षा और परराष्ट्र मामले रखे तथा शेष विषयों पर कानून बनाने का अधिकार तिब्बतियों को प्रदान करे। इससे चीन की एकता अखण्डता एवं संप्रभुता सुरक्षित रहेगी और तिब्बत को स्वशासन का अधिकार मिल जायेगा। इस "मध्यममार्ग" को विश्वजनमत का समर्थन सदैव बढ़ता जा रहा है। चीन सरकार इस समाधान को अपनाकर अपनी छवि भी सुधार सकती है। लेकिन चीन से इसकी आाशा करना व्यर्थ है।

अफगानिस्तान से अमरीका के लौटते ही चीन ने तालिबानी सरकार से साजिशपूर्ण तालमेल बैठा लिया है। इसकी मदद से वह अमरीकी शस्त्रास्त्रों, विभिन्न उपकरणों, संयंत्रों तथा गोपनीय सूचनाओं एवं स्थलों का अध्ययन करेगा। अपने हित में उनका इस्तेमाल करेगा। अमरीका ने अफगानिस्तान में इन्हें छोड़कर नया संकट पैदा कर दिया है। अफ्रनिस्तान की तालिबान सरकार और पाकिस्तान की इमरान सरकार के मित्रतापूर्ण संबंधों का भरपूर लाभ उठायेगी चीन सरकार। पूरे विश्व, विशेषकर भारत के लिये यह नया संकट है। अमरीकी सामग्री का चीन के हाथों दुरुपयोग निश्चित है। तिब्बत को 1959 में ही पूरी तरह कब्जा चुका चीन कई भारतीय भूभाग पर अवैध नियंत्रण किये हुए है। उसका अगला शिकार अफगानिस्तान है। ताइवान तो पहले से त्रस्त है। चीन के अन्य पड़ोसी भी उसकी उपनिवेशवादी नीति के शिकार हैं। ऐसी स्थिति में चीन के हाथों अफगानिस्तान में घातक सामग्री हाथ लगी है। इससे विश्व शांति एवं सुरक्षा को नया खतरा है।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9829806065, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

• करुणा और अहिंसा

dalailama.com, १८ अगस्त, २०२१

परम पावन दलाई लामा ऑनलाइन प्रवचन के दौरान

थेकछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। १८ अगस्त की सुबह 'जो यंग ओके' ने दक्षिण कोरिया के लबसम शेडुप लिंग धर्म केंद्र की ओर से आयोजित कार्यक्रम का परिचय दिया और परम पावन दलाई लामा से इस कार्यक्रम में वर्चुअल माध्यम से जुड़े श्रोताओं को संबोधित करने का अनुरोध किया। अपना संबोधन शुरु करने से पहले परम पावन ने बौद्ध धर्म के बारे में प्रवचन देने का अवसर प्रदान करने के लिए आयोजकों के प्रति धन्यवाद ज्ञार्पित किया।

उन्होंने कहा, 'तिब्बत में बौद्ध धर्म की स्थापना नालंदा परंपरा के आचार्य शांतरक्षित ने की थी। हम भारत से प्राप्त त्रिपिटकों का अध्ययन करते हैं और तीन प्रशिक्षणों की साधना में संलग्न होते हैं। यही वह प्रक्रिया है जिसका मैंने एक भिक्षु के रूप में भी पालन किया। मैंने त्रिपिटकों का अध्ययन किया, इससे मैंने जो समझा उसे अपने जीवन में उतारने की कोशिश की और ध्यान के द्वारा इसके अनुभव को प्राप्त किया। आज मैं जो समझाने जा रहा हूं वह उस अनुभव पर आधारित है।'

उन्होंने कहा, 'मैं सभी धार्मिक परंपराओं का सम्मान करता हूं। हमारे पास अलग-अलग अनुयायियों की योग्यता के अनुकूल अलग-अलग विचार और दार्शनिक दृष्टिकोण हैं। बुद्ध ने अपने शिष्यों की जरूरतों के अनुसार अलग-अलग व्याख्याएं भी दी हैं। हालांकि, ये सभी विभिन्न परंपराएं प्रेम, करुणा और अहिंसा को आगे बढ़ाने के महत्व पर जोर देती हैं। ऐतिहासिक रूप से कुछ लोग धर्म के नाम पर लड़े और मारे भी गए, लेकिन उस तरह का व्यवहार अब अतीत में छोड़ दिया जाना चाहिए।'

दुनिया की सभी महान धार्मिक परंपराएं भारत में विकसित हुई हैं और परंपरागत रूप से एक-दूसरे को अत्यंत सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। यह एक ऐसा शिष्टाचार है, जिसे दुनिया के अन्य हिस्सों में भी अपनाया जा सकता है।

परम पावन ने कहा कि, 'बुद्ध अधर्म को पानी से नहीं धोते हैं, न ही वे अपने हाथों से प्राणियों के कष्टों को दूर करते हैं, न ही वे अपनी अनुभवों को दूसरों पर थोपते हैं। वे सत्त्व के सत्य की शिक्षा देकर (प्राणियों) को मुक्त करते हैं।

बुद्ध पहले बोधिचित्त के जागरुक मन को जाग्रत करते हैं। दो समुच्चय (योग्यता और ज्ञान के) को प्राप्त करने के बाद वे ज्ञान प्राप्त करते हैं और फिर अपने अनुभव को अन्य भव्य प्राणियों के साथ साझा करते हैं। यह बात कहने का मेरा आधार यह है कि बुद्ध ने कहा, 'आप अपना स्वामी खुद हैं।' आप धर्म की साधना करना चाहते हैं या नहीं, यह आप पर ही निर्भर करता है।

दुख का मूल हमारा चंचल मन है, इसलिए मन को नियंत्रित करने के लिए धर्म की साधना जरूरी है। बुद्ध ने कहा है कि करुणामय व्यक्ति कई माध्यमों से प्राणियों का प्रबोधन करते हैं। चूंकि प्राणी चीजों की प्रकृति से अनभिज्ञ हैं, इसलिए उन्होंने शून्यवाद का उपदेश दिया जो शांत और अजन्मा है। अपने दशकों के धर्म के अध्ययन के दौरान जो मैंने समझा उसे अपने जीवन में अपनाया और इससे मैंने अपने जीवन में परिवर्तन का अनुभव किया है।

मन को प्रशिक्षित करके प्रतिकूलताओं से पार पाना संभव है। हम नैतिकता की साधना के द्वारा अपने मन की एकाग्रता को विकसित करते हैं और फिर उस एकाग्र मन से देखते हैं कि वस्तु की वास्तविक स्थिति क्या है। इसके परिणामस्वरूप विकसित हुई अंतर्दृष्टि से हम पथ पर अग्रसर होते हैं।

परम पावन ने बताया कि बौद्ध धर्म का मूल आधार चार आर्य सत्य हैं। बुद्ध ने दुख और दुख के कारण के बारे में उपदेश दिया है। लेकिन उन्होंने यह भी बताया है कि दुख और उसके कारण को दूर किया जा सकता है; उससे मुक्ति मिल सकती है। उन्होंने शून्यवाद का उपदेश दिया। 'हृदय सूत्र' में बताया गया है कि 'आत्मा शून्य है; शून्यता ही आत्मा है। शून्यता आत्मा से भिन्न नहीं है; आत्मा भी शून्यता से भिन्न नहीं है।

इस विषय पर श्रोताओं की ओर से किए गए एक ही तरह के कई प्रश्नों के उत्तर में परम पावन ने इस बात से सहमति जताई की कि मानवता आज कोविड महामारी और जलवायु परिवर्तन सहित कई संकटों का सामना कर रही है। फिर भी उन्होंने कहा कि मनुष्य के रूप में हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए अपनी अनूठी बुद्धि का उपयोग करना चाहिए। उन्होंने रेखांकित किया कि तिब्बत छोड़ने और शरणार्थी बनने के बाद से उन्हें कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। लेकिन इन कठिनाइयों ने वास्तव में उन्हें धर्म की साधना में रचनात्मक योगदान दिया है।

एक प्रश्न आया कि आचार्य शांतिदेव द्वारा रचित 'बोधिसत्व के मार्ग में प्रवेश (इंटरिंग इनटू द वे ऑफ अ बोधिसत्व)' में दिए गए सुझावों के अनुरुप बच्चों को अपने माता-पिता के क्रोध का सामना कैसे करना चाहिए। इसका उत्तर देते हुए परम पावन ने बताया कि इस पुस्तक के अध्याय- छह में क्रोध के नुकसान और इससे निपटने के बारे में स्पष्ट तौर पर मार्गदर्शन किया गया है। जबकि अध्याय आठ में परोपकारी दृष्टिकोण को विकसित करने से होनेवाले लाभों के बारे में वर्णन किया गया है। इन सबका एक ही लक्ष्य है- मन की एकाग्रता की स्थिति पैदा करना। क्रोध पर काबू पाने और अपने में करुणा विकसित करने के बारे में सीखना भावनात्मक स्वच्छता की साधना का हिस्सा है।

एक महिला ने आम जीवन में शून्यता के अर्थ जानने के लिए प्रश्न किया जो कि क्वांटम यांत्रिकी दृष्टिकोण के सारांश के तौर पर मददगार हो सकता है। परम पावन ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि क्वांटम फीजिक्स के विद्वानों का कहना है कि चीजों का अपनी तरफ से वस्तुनिष्ठ अस्तित्व होता है, लेकिन प्रयोग के दौरान वे उस तरह से मौजूद नहीं पाए जाते हैं। बौद्ध मत में चीजें अंतर्निहित अस्तित्व से रिक्त हैं। इस जटिल दृष्टिकोण को स्वीकार करना कठिन है। इसका संकेत चंद्रकीर्ति द्वारा दर्शन के अलग-अलग पक्षों के जाने-माने आचार्यों- वसुबंधु, दिग्नाग और धर्मकीर्ति की आलोचनाओं में मिल जाता है। इन आचार्यों ने नागार्जुन के मत को अस्वीकार कर दिया था।

एक युवक जो विश्लेषण में शामिल होने और अपने शिक्षक से अलग निष्कर्ष पर आने के बारे में चिंतित था, उससे परम पावन ने कहा कि जब तक उसके निष्कर्षों से शिक्षक के सम्मान को ठेस नहीं पहुंचती है, तब तक शिक्षक से असहमत होना ठीक है। परम पावन ने उसे सुझाव दिया कि अपने निष्कर्षों पर मित्रों के साथ चर्चा करना उसके लिए बहुत शिक्षाप्रद हो सकता है।

यह पूछे जाने पर कि छात्रों को महान भारतीय बौद्ध धर्मग्रंथों और 'संकलित विषयों' का अध्ययन के लिए किस तरह से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, परम पावन ने श्रोताओं को याद दिलाया कि उन्होंने बौद्ध दर्शन के अध्ययन के पहले चरण में बिना किसी तर्क-वितर्क के चार आर्य सत्य और विनय पिटक की शिक्षाओं को ग्रहण करने की रुपरेखा तैयार की थी। अध्ययन के दूसरे चरण के दौरान उन्होंने शून्यवाद के गहन दृष्टिकोण और बोधिसत्व के व्यापक आचरण का अध्ययन करने का सुझाव दिया। ये दोनों ही विषय तर्क की कसौटी पर दृढ़ता से खरे उतरते हैं।

इसके बाद '४०० श्लोक' और 'एंटरिंग इन द मिडिल वे (मध्यम मार्ग प्रवेश)' के साथ-साथ 'कनेक्टेड टॉपिक्स (संग्रहित विषय)' का अध्ययन करना समीचीन होता है जो शिक्षा के अतुल्य शक्तिशाली तंत्र को विकसित करता है। बौद्ध अध्ययन के इस पाठ्यक्रम को तिब्बत में एक हजार से अधिक वर्षों तक बनाए रखा गया था और अब इसे दक्षिण भारत में फिर से स्थापित मठों के शिक्षा केंद्रों में दोहराया और विकसित किया गया है। तिब्बत में तो छात्र चालीस साल तक अध्ययन करने के बाद स्नातक हो पाते थे। आज, कई छात्र बीस वर्षों के अध्ययन के बाद ही स्नातक हो जाते हैं, लेकिन पाठ्यक्रम अब भी व्यापक और गंभीर बना हुआ है।

लबसम शेडुप लिंग मठ के महंत गेशे (तिब्बती शिक्षा तंत्र में स्नातक) तेनज़िन नामखड़ ने परम पावन को उनके गूढ़ प्रवचन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि वर्चुअल माध्यम से उपस्थित हुए छात्रगण ने इस प्रवचन से जितना कुछ सीखा- समझा है, उसे वे अपने जीवन में उतारने की पूरी कोशिश करेंगे। उन्होंने परम पावन को सूचित किया कि श्रृंखला का पहला खंड 'साइंस एंड फिलॉसफी इन द इंडियन बुद्धिस्ट क्लासिक्स (भारतीय बौद्ध शास्त्रों में विज्ञान और दर्शन)' का कोरियाई भाषा में अनुवाद हो गया है और वर्तमान में यह छपाई की प्रक्रिया में है। इसके बाद उन्होंने इस कार्यक्रम को समाप्त करने की घोषणा की और उम्मीद जताई कि परम पावन कोरिया की यात्रा करेंगे।

परम पावन ने अपने जवाब में कहा कि जब उन्होंने इस केंद्र को लबसम शेडुप लिंग नाम दिया तो उन्होंने आशा व्यक्त की कि सदस्य तीनों उच्च प्रशिक्षणों को प्राप्त करने के लिए अध्ययन, चिंतन और ध्यान के माध्यम से अपनी साधना को पूर्ण करने में सक्षम होंगे। परम पावन ने अपने श्रोताओं से कहा कि इसका उद्देश्य सम्यक्त्व के मार्ग पर प्रगति करना है और वे निरंतर प्रार्थना करते रहें कि वे ऐसा करने में सक्षम होंगे। अंत में उन्होंने उल्लेख किया कि उन्हें विश्वास है कि जिन्होंने इस जीवन में उनके साथ संबंध बनाया है, वे भविष्य में उस संबंध को नवीकृत करने में सक्षम होंगे।

• तिब्बती राजनीतिक कैदी ने सजा पूरी की, लेकिन रिहाई की कोई खबर नहीं *ल्हासा के एक अनाथालय में प्रबंधक और शिक्षक बांगरी रिनपोछे ने 'अलगाववाद' के आरोप में २० साल तक जेल की सजा काटी।*

rfa.org, ०२ अगस्त, २०२१

अलगाववाद के आरोप में २० साल से अधिक समय से जेल में बंद एक तिब्बती स्कूल के शिक्षक को सजा पूरी करने के बाद पिछले हफ्ते जेल से रिहा किया जाना था। लेकिन उनकी रिहाई के बारे में कुछ भी पता नहीं चल रहा है, जिससे उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य को लेकर चिंताएं पैदा हो गई। एक तिब्बती अधिकार समूह ने रविवार को इस बारे में जानकारी दी है।

भारत के धर्मशाला स्थित 'तिब्बती सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स एंड डेमोक्रेसी' ने ०१ अगस्त को बताया कि तिब्बती धार्मिक शिक्षक बांगरी रिनपोछे, जिसे जिग्मे तेनज़िन न्यिमा के नाम से भी जाना जाता है, को एक मुकदमे में २६ सितंबर, २००० को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी। बाद में ३१ जुलाई, २००३ को उनकी आजीवन कैद की सजा को कम करके १९ साल के कारावास में बदल दिया गया था।

टीसीएचआरडी में शोधकर्ता तेनजिन दावा ने सोमवार को आरएफए को बताया कि उनकी सजा ३१ जुलाई को पूरी होने वाली थी, लेकिन उनकी रिहाई के बारे में कुछ भी पता नहीं चला है। दावा ने कहा कि हम सभी जानते हैं कि बांगरी रिनपोछे ने अपने जीवन के २२ साल जेल में बिताए हैं। हालांकि, उन्होंने अपनी जेल की सजा पूरी कर ली है, लेकिन हम नहीं जानते कि उन्हें रिहा किया गया है या नहीं, या उनकी वर्तमान स्वास्थ्य स्थितियों के बारे में हमें कुछ भी पता नहीं है। दावा ने कहा, 'चूंकि हमने उनकी रिहाई के बारे में कुछ नहीं सुना है, इसलिए हम अभी बहुत चिंतित हैं।' यह एक सर्वविदित तथ्य है कि चीनी जेलों के अंदर तिब्बती कैदियों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। उन्होंने कहा कि 'चीनी सरकार को तुरंत (बांगरी रिनपोछे की) स्थिति, ठिकाने और सेहत के बारे में स्पष्ट करना चाहिए।'

तिब्बती राजनीतिक कैदी भंगरी रिनपोछे

तिब्बत की राजधानी ल्हासा में एक अनाथालय तथा स्कूल के प्रबंधक और तिब्बती भाषा, चीनी भाषा, अंग्रेजी भाषा और गणित के अध्यापक बांगरी रिनपोछे को उनकी पत्नी न्यिमा चोएड्रोन के साथ अगस्त १९९९ में गिरफ्तार किया गया था। उनपर आरोप था कि वह स्कूल के एक कर्मी द्वारा शहर के मुख्य चौराहे पर प्रतिबंधित तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज फहराने और फिर खुद को विस्फोटकों से उड़ा लेने की साजिश में शामिल थे।

टीसीएचआरडी ने कहा कि चोएड्रोन की दस साल की सजा को बाद में कम कर दिया गया और फरवरी २००६ में उन्हें रिहा कर दिया गया। उनकी गिरफ्तारी के तुरंत बाद अनाथालय को बंद कर दिया गया था। ज्ञातव्य है कि पूर्व में स्वतंत्र राष्ट्र रहे तिब्बत पर

७० साल पहले चीन द्वारा आक्रमण किया गया था और बलपूर्वक इसे चीन में शामिल किया गया था।

सूत्रों का कहना है कि हाल के वर्षों में तिब्बती राष्ट्रीय अस्मिता का दावा करने के लिए तिब्बती भाषा अधिकार आंदोलन विशेष फोकस बन गया है। इस कारण से मठों और कस्बों में अनौपचारिक रूप से आयोजित तिब्बती भाषा की शिक्षा प्रदान करने को आम तौर पर 'अवैध समागम' माना जाता है और ऐसे शिक्षकों को हिरासत में लिया जाता है और गिरफ्तार किया जाता है।

आरएफए की तिब्बती सेवा के लिए लोबसांग गेलेक द्वारा रिपोर्ट किया गया। तेनज़िन डिकी द्वारा अनूदित। रिचर्ड फिनी द्वारा अंग्रेजी में लिखित।

• गांसु में तिब्बती मठ को बंद करने को मजबूर किया; भिक्षुओं और भिक्षुणियों से चीवर उतरवा लिए गए

tibet.net, ०६ अगस्त, २०२१

चीनी सरकार द्वारा तिब्बत के मठ को जबरन बंद कराते हुए

हाल के वीडियो फुटेज में दीख रहा है कि गांसु प्रांत में स्थानीय अधिकारी खरमार (चीनी: होंगचेंग) नामक एक तिब्बती मठ से भिक्षुओं और भिक्षुणियों को जबरन निकाल रहे हैं। अधिकारियों द्वारा इस तिब्बती मठ को जबरन बंद कर दिए जाने से इन भिक्षुओं और भिक्षुणियों को मजबूरन मठवासी जीवन का त्याग करना पड़ा है।

एक चीनी मीडिया संस्थान 'मिंगडे' के अनुसार, खरमार मठ को बंद करने और वहां से भिक्षुओं और भिक्षुणियों को जबरन निकालने की कार्रवाई ३१ जुलाई २०२१ को शुरू हुई, जब योंगजिंग काउंटी सरकार ने वहां बड़ी संख्या में पुलिस बलों को भेजा। यह कार्रवाई चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की २१ और २२ जुलाई को हुई तिब्बत यात्रा के कई दिनों बाद ही हुई है।

चिंताजनक वीडियो

घटना के वीडियो विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वायरल रहे थे। ऐसे ही एक क्लिप में एक भिक्षुणी एक विशाल बैनर के नीचे मठ के सामने धरना-प्रदर्शन करते हुए प्रार्थना करती नजर आ रही हैं। भिक्षुणी द्वारा टांगे गए बैनर में लिखा है जिसका अर्थ है कि 'मठवासी समुदाय की जबरन बेदखली देश के कानून के अनुरूप सही नहीं है।' एक अन्य क्लिप में कई भिक्षुणियों को मंदिर के बाहर सादे कपड़ों के जासूसों द्वारा जबरन घसीटते हुए दिखाया गया है, जबकि अन्य भिक्षुणियों को मठ के सभा कक्ष से बाहर निकलते देखा गया था। एक अन्य क्लिप में भिक्षुणियों को रोते हुए देखा जा सकता है, जबकि एक बुजुर्ग लामा शोकग्रस्त भिक्षुणी को सांत्वना देते हुए जाते दिख रहे हैं। एक और चौंकाने वाले क्लिप में एक भिक्षु को मठ की छत के किनारे पर खड़ा देखा गया था, जो अधिकारियों को वहां से 'चले जाने' या नहीं जाने पर खुद कूद जाने की धमकी दे रहा था।

मठ को अप्रत्याशित रूप से बंद किए जाने के वास्तविक कारणों के बारे में आधिकारिक तौर पर कुछ भी नहीं बताया गया है, क्योंकि योंगजिंग काउंटी के अधिकारियों से जानकारी लेने के लिए रेडियो फ्री एशिया द्वारा प्रयास किए जाने पर अधिकारियों ने या तो टिप्पणी करने से इनकार कर दिया या मिलने से ही इनकार कर दिया। मिंगडे के अनुसार, मठ ने कोविड-१९ राहत कोष के लिए ३,००,००० युआन से अधिक जुटाए और दान किए हैं। इसने स्थानीय सरकार का ध्यान मठ की ओर खींचा। प्रशासन ने मठ के संचालकों से कहा कि वे सरकार के साथ अपने धन को समान रूप से बांटे। जब मठवासी समुदाय ने ऐसा करने से इनकार कर दिया तो स्थानीय अधिकारी मठ को बंद करने के लिए सादे कपड़ों में आ धमके।

प्रसिद्ध मठ

'इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत' के अनुसार, तिब्बती भाषा के शब्द खरमार का हिन्दी में शाब्दिक अर्थ 'लाल किला' होता है। यह खरमार लिंक्सिया हुई स्वायत्त प्रिफेक्चर में स्थित है, जो सीधे कन्ल्हो तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर की सीमा से सटा हुआ है। इतिहास में जब यह क्षेत्र तिब्बती साम्राज्य का हिस्सा हुआ करता था तब इस क्षेत्र को तिब्बती में गाचू के नाम से जाना जाता था।

मंगोल साम्राज्य के दौरान, १३वीं शताब्दी में कुबलई खान के आदेश पर तिब्बती बौद्ध धर्म के शाक्य स्कूल के पांचवें नेता ड्रोगोन चोग्याल फाग्पा को सम्मानित करने के लिए उस स्थान पर एक पैगोडा (बौद्ध मंदिर) की स्थापना की गई थी। इसी पैगोडा के स्थान पर बाद में खरमार मठ का निर्माण किया गया था। माओत्से तुंग की सांस्कृतिक क्रांति के दौरान पैगोडा और मठ- दोनों को ध्वस्त कर दिया गया था। बाद में २०११ में इसका पुनर्निर्माण किया गया। मठ शाक्य मत का अनुयायी है, जो तिब्बती बौद्ध धर्म के चार मतों में से एक है।

• चीनी प्रचार व्याख्यान में भाग लेने में विफलता के लिए सिचुआन में तिब्बती व्यक्ति गिरफ्तार *१९ वर्षीय शेरब दोरजे ने तिब्बती स्कूली बच्चों को उनकी अपनी भाषा में पढ़ाने की अनुमति देने के लिए भी अधिकारियों के पास याचिका दायर की थी।*

rfa.org, १८ अगस्त, २०२१

तिब्बत में हमारे सूत्रों के अनुसार, पश्चिमी चीन के सिचुआन प्रांत में पुलिस ने सोमवार को एक ऐसे तिब्बती व्यक्ति को गिरफ्तार किया, जिसने सत्तारूढ़ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की प्रशंसा करने और सरकारी उद्देश्यों के बारे में तिब्बतियों को निर्देश देने के लिए स्थानीय अधिकारियों द्वारा आयोजित एक प्रचार सभा में भाग लेने से इनकार कर दिया था। एक स्थानीय निवासी ने आरएफए की तिब्बती सेवा को बताया कि न्गाबा (चीनी : आबा) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के ट्रॉटसिक

टाउनशिप के निवासी १९ वर्षीय शेरब दोरजे को उनके घर के पास हिरासत में ले लिया गया और हथकड़ी लगाकर ले जाया गया।

आरएफए के सूत्र ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, 'तिब्बती युवा सरकार की नीतियों के खिलाफ विद्रोह नहीं करें, इसे सुनिश्चित करने के लिए हाल ही में कुछ पुलिस अधिकारी युवा तिब्बतियों के लिए कम्युनिस्ट पार्टी के राजनीतिक शिक्षा अभियान के तहत प्रशिक्षण आयोजित कराने के लिए ट्रॉटसिक पहुंचे।' सूत्र ने कहा, 'शेरब दोरजे उस कार्यक्रम में शामिल नहीं हुए, इसलिए उन्हें बाद में उनके घर के पास से गिरफ्तार कर लिया गया और हथकड़ी लगा दी गई।'

शेराब दोर्जे को चीनी पुलिस द्वारा सिचुआन तिब्बती स्वायत्त प्रान्त में गिरफ्तार करते हुए

सूत्रों के अनुसार, गांसु प्रांत के कन्ल्हो (गन्नान) प्रिफेक्चर में माचू काउंटी मिडिल स्कूल से स्नातक दोरजे संभवत: इसलिए भी पुलिस की निगाह में चढ़ गए हो सकते हैं कि उन्होंने इस साल गर्मी की छुट्टी के बाद स्कूल फिर से खुलने पर केवल चीनी भाषा में कक्षा में पढ़ाई कराने के काउंटी सरकार के आदेश का विरोध करने वाली याचिका पर छात्रों के साथ हस्ताक्षर किए थे।

हाल के वर्षों में तिब्बती भाषा अधिकार कार्यकर्ता तिब्बती राष्ट्रीय पहचान पर जोर देने के प्रयासों में विशेष फोकस बन गए हैं। गौरतलब है कि किंडरगार्डन और प्राथमिक स्कूल वाले तिब्बती स्कूलों में अब लगभग पूरी तरह से चीनी भाषा में ही पढ़ाई होती है।

सूत्रों का कहना है कि मठों और कस्बों में अनौपचारिक रूप से आयोजित तिब्बती भाषा के पाठ्यक्रमों को आम तौर पर 'अवैध संघ' माना जाता है और शिक्षकों को हिरासत में लिया जाता है या उनकी गिरफ्तारी भी हो सकती है।

राजनीतिक रुप से संवेदनशील चर्चा

सूत्रों ने पहले की एक रिपोर्ट में आरएफए को बताया था कि ट्रॉटसिक में पुलिस ने पिछले महीने स्थानीय मठ में एक वरिष्ठ भिक्षु को लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'वीचैट' पर राजनीतिक रूप से संवेदनशील मुद्दे पर चर्चा करने के संदेह में गिरफ्तार किया था।

न्गाबा के एक सूत्र ने आरएफए को बताया कि न्गाबा के ट्रॉटसिक मठ में अनुशासन के प्रभारी ४५ वर्षीय भिक्षु कोनमी को २० जुलाई को हिरासत में लिया गया था।

आरएफए के सूत्र ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, 'उन्होंने अपने वीचैट ग्रुप पर प्रार्थना की थी, लेकिन उन्होंने केवल वहां पर जमा की गई प्रार्थनाओं की संख्या के बारे में बात की थी।' सूत्र ने कहा कि 'उन्होंने राजनीतिक मुद्दों के बारे में कुछ भी नहीं कहा।'

सूत्रों ने आरएफए को बताया कि तिब्बत और पश्चिमी चीन के तिब्बती क्षेत्रों में संचार बंद होने से चीनी अधिकारियों द्वारा राजनीतिक रुप से संवेदनशील माने जाने वाले विरोध, गिरफ्तारी या अन्य जानकारी के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करना मुश्किल हो गया है। गौरतलब है कि पूर्व में एक स्वतंत्र राष्ट्र तिब्बत पर ७० साल पहले चीन द्वारा आक्रमण किया गया था और बल प्रयोग द्वारा चीन में शामिल कर लिया गया था। चीनी अधिकारियों ने इस क्षेत्र पर अपनी कठोर पकड़ बनाए रखी है। इस दौरान तिब्बतियों की राजनीतिक गतिविधियों और सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान की शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति को प्रतिबंधित किया जाता है। ऐसा करने पर तिब्बतियों का उत्पीड़न किया जाता है, यातनाएं दी जाती हैं, कारावास में डाला जाता है और न्यायिक प्रक्रिया के बगैर ही उनकी हत्या तक कर दी जाती है।

आरएफए की तिब्बती सेवा के लिए संग्याल कुंचोक द्वारा रिपोर्ट की गई। तेनज़िन डिकी द्वारा अनूदित। रिचर्ड फिनी द्वारा अंग्रेजी में लिखित।

• ड्ज़ा वोन्पो में लगभग ६० तिब्बतियों को परम पावन दलाई लामा के चित्र रखने पर गिरफ्तार किया गया

tibet.net, ३० अगस्त २०२१

चीनी अधिकारियों ने परम पावन दलाई लामा की तस्वीरें रखने के आरोप में पिछले सप्ताह तिब्बती सिचुआन प्रांत के कर्ज़े (चीनी : गंजी) स्वायत्त प्रिफेक्चर के डेजा वोन्पो में १९ भिक्षुओं और ४० आम लोगों सहित ६० तिब्बतियों को गिरफ्तार किया है। पहले से ही प्रतिबंधित ड्ज़ा वोन्पो शहर में इस मार्च से प्रतिबंध और निगरानी और कड़ी हो जाने के कारण यह खबर कई महीने बाद आई है।

तिब्बत के ड्ज़ा वोन्पो मे चीनी सैन्य

हमारे सूत्र के अनुसार, पिछले महीनों में मारे गए विभिन्न छापों के दौरान कथित तौर पर परम पावन दलाई लामा के चित्रों के बरामद होने के बाद चीनी पुलिस ने २२ अगस्त को तिब्बतियों को उनके घरों से गिरफ्तार किया। गिरफ्तार किए गए कुछ भिक्षुओं की पहचान लोदेन चुंगलम, पल्क्यब, तेनज़िन लोसेल, पेंडो, लोशेर, चोचोक, गदेन, शेरब, जैम्पेल, डालो, चोएपा, सोनम गलाक और तामदीन नोरबू के रूप में हुई है। अन्य की पहचान उस समय तक अज्ञात थी। सूत्र ने पुष्टि की है कि पकड़े गए तिब्बती वर्तमान में सेरशुल (चीनी: शिकू) काउंटी पुलिस की हिरासत में हैं।

सामूहिक गिरफ्तारी के तीन दिन बाद २५ अगस्त को चीनी अधिकारियों ने स्थानीय निवासियों को एक नगर बैठक के लिए बुलाया जिसमें १८ वर्ष से अधिक उम्र के तिब्बतियों के लिए उपस्थित होना अनिवार्य था। इस आदेश के अनुपालन में विफल रहने पर दंड का प्रावधान किया गया था। बैठक 'तिब्बतियों को परम पावन दलाई लामा की तस्वीरें न रखने की चेतावनी देने के लिए', निर्वासित तिब्बतियों को 'अपने मोबाइल फोन से किसी भी संवेदनशील जानकारी शेयर न करने के लिए' और 'कम्युनिस्ट पार्टी का अनुसरण करने के लिए' बुलाई गई थी।

चीनी हिरासत में तिब्बती कैदियों के क्रूर और अमानवीय व्यवहार की पुष्टि करते हुए

सूत्र ने कहा कि, इज़्ज़ा वोन्पो मठ के एक किशोर भिक्षु तेनज़िन न्यिमा की मौत के बाद क्षेत्र में शहर के निवासियों का निरीक्षण किया गया था। तेनजिन न्यिमा की मौत पुलिस यातना के कारण १९ जनवरी २०२१ को हो गई थी। मार्च २०२१ में चीनी अधिकारियों ने इज़्ज़ा वोन्पो में तिब्बतियों को डराने के लिए अभियान चलाया। इसमें पुलिस और कमांडो द्वारा शहर में परेड और परम पावन दलाई लामा की तस्वीरों को घरों से जब्त करने के लिए 'सफाई' अभियान शामिल था।

तिब्बत पर कब्जे के बाद से चीन सरकार ने परम पावन दलाई लामा की तस्वीर रखने पर प्रतिबंध लगा दिया है। १९८९ के नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित परम पावन को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार द्वारा बेतुके ढंग से 'अलगाववादी' कहा जाता है। इसलिए, निर्वासित परम आदणीय नेता के प्रभाव को तिब्बत के भीतर से मिटाने के प्रयासों के तहत परम पावन के प्रति श्रद्धा प्रकट करनेवाले किसी भी कार्य पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इसमें उनके चित्रों, बौद्ध शिक्षाओं और पुस्तकों को रखना और एक-दूसरे को देना भी शामिल है। इनमें से कोई भी सामग्री पाए जाने पर इसे रखने वाले तिब्बतियों को अक्सर कठोर दंड दिया जाता है।

• सीटीए ने भारत का ७५वां स्वतंत्रता दिवस मनाया

tibet.net, १५ अगस्त, २०२१

धर्मशाला। भारत के ७५वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर १५ अगस्त को कशाग सचिवालय में एक संक्षिप्त स्मृति समारोह का आयोजन किया गया। सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग के नेतृत्व में आयोजित समारोह में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के विभिन्न विभागों के सचिवों और वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

विभागीय सचिवों और वरिष्ठ सीटीए अधिकारियों के साथ सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग

समारोह की शुरुआत में सिक्योंग द्वारा भारतीय राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' फहराया गया और उसके बाद भारत का राष्ट्रगान गाया गया। समारोह के बाद, सिक्योंग ने मीडिया कर्मियों को संबोधित किया और इस ऐतिहासिक दिन पर भारत की सरकार और लोगों को बधाई दी।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा, 'यह एक अच्छी तरह से स्थापित इतिहास है कि भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष २०० वर्षों तक चला। इसकी तुलना में तिब्बती संघर्ष अपने ७०वें वर्ष में ही है जो अपेक्षाकृत कम अवधि का है। जब किसी राष्ट्र या लोगों के संघर्ष का संबंध हो तो चाहे वह अगले १०० वर्षों तक जारी रहे, उसे हमें नहीं रोकना चाहिए। हमें सामूहिक रुप से प्रयास करते रहना चाहिए।'

उन्होंने कहा, 'उदाहरण के लिए भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्वतंत्रता प्राप्त करने के साधन के रूप में शांति और हिंसा दोनों के पैरोकार थे। हालांकि, महात्मा गांधी के नेतृत्व वाले शांतिपूर्ण आंदोलन ने भारत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठित किया। तिब्बती संघर्ष महात्मा गांधी द्वारा समर्थित और परम पावन दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के नेतृत्व वाले शांतिपूर्ण मार्ग पर आधारित है। चीनी कब्जे के तहत तिब्बत के अंदर तिब्बतियों का तीव्र दमन हो रहा है, जिससे उन्हें तिब्बत मुद्दे की पैरोकारी करने के लिए अपने स्वयं का जीवन देकर आत्मदाह करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।'

भारत ने स्वतंत्रता हासिल की और भारतीयों को आजादी की स्वर्णिम रोशनी में जगमगाने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी तरह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दुनिया भर के कई देशों ने अपनी स्वतंत्रता हासिल की। जब दुनिया के बाकी देश स्वतंत्रता प्राप्त कर रहे थे, दुर्भाग्य से इसी दौर में तिब्बत पर चीन द्वारा आक्रमण किया गया। उन्होंने आग्रह किया कि भविष्य में स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए मैं तिब्बत के अंदर और बाहर रहनेवाले तिब्बतियों से पूरे दिल से खुद को समर्पित होने का आग्रह करता हूं।'

सीसीपी द्वारा तथाकथित 'तिब्बत मुक्ति दिवस' की ७०वीं वर्षगांठ के हालिया उत्सव के बारे में पूछे गए सवालों के जवाब में सिक्योंग ने कहा कि जिसे चीन 'मुक्ति दिवस' के रूप में मनाता है, वह हम तिब्बतियों के लिए 'कब्जे और उत्पीड़न' की वर्षगांठ है।'

स्टेट काउंसिल ने हाल ही में चीन के अंदर मानवाधिकार की स्थिति और विशेष रुप से अल्पसंख्यक क्षेत्रों में विकास की स्थिति पर एक श्वेत पत्र प्रकाशित किया। यह रिपोर्ट केवल सीसीपी के तहत हुई प्रगति को दिखाती है। जबकि दुनिया के अन्य हिस्सों में लोगों द्वारा प्राप्त किए गए अहस्तांतरणीय मौलिक अधिकार, जिनकी सरकारों को रक्षा करनी चाहिए, को इस श्वेत पत्र में बट्टे खाते में डाल दिया गया है। इसलिए, यह स्पष्ट है कि यह रिपोर्ट विश्वसनीय नहीं है। तिब्बत और चीनी कब्जे वाले अन्य क्षेत्रों में मानवाधिकारों का उल्लंघन अभी भी जारी है। तिब्बत की मुक्ति के सीसीपी के दावों से सवाल उठता है- तिब्बत को किससे या किस तरह से मुक्त कराया गया था? सिक्योंग ने कहा कि मुक्ति की बजाय तिब्बती पिछले ७० वर्षों से तड़प रहे हैं और यह उत्सव का कोई औचित्य नहीं है।

• सिक्योंग ने लेह में स्थानीय लद्दाखी नेताओं और गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात की

tibet.net, २३ अगस्त, २०२१

लेह। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग ने लद्दाख की अपनी आधिकारिक यात्रा के दूसरे दिन २१ अगस्त को दुचिक खानाबदोश बस्ती का दौरा किया। सिक्योंग ने दुचिक में आठ खानाबदोश परिवारों से मुलाकात की और हाल ही में पशुओं में आई महामारी पर चर्चा की जिससे १२५० बकरियां और भेड़ें मारे गए। सिक्योंग ने बताया कि तिब्बती जनता ने नुकसान की भरपाई के लिए भीड़ से चंदा वसूलकर धन जुटाया है और चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए स्थानीय प्रशासन की पेशकश की भी जानकारी दी है। सिक्योंग ने दानदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए खानाबदोशों को भविष्य में ऐसी आपदाओं से बचने के लिए पहले से तैयारी करने की सलाह दी।

दुचिक की अपनी यात्रा के बाद सिक्योंग ने शे मठ और थिकसे मठ का दौरा किया जहां उन्होंने प्रार्थना की और मत्था टेका। यात्रा के दौरान उन्हें थिकसे रिनपोछे से भी आशीर्वाद प्राप्त हुआ। दोपहर में, सिक्योंग ने वहां रहने वाले बुजुर्ग तिब्बतियों से मिलने के लिए टीसीवी वृद्धाश्रम का दौरा किया। बाद में, सिक्योंग ने मुख्य प्रतिनिधि, स्थानीय न्याय आयुक्त, सहकारी समिति के प्रबंधक, लेह और झांगथांग के क्षेत्रीय तिब्बती मुक्ति साधना केंद्र के कर्मचारियों और लद्दाख में अन्य सरकारी और गैर-

सरकारी संगठनों के कर्मचारियों के साथ अनौपचारिक बैठक की।

सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग का दुचिक खानाबदोश बस्ती में स्वागत

अनौपचारिक बैठक के दौरान, सिक्योंग ने लद्दाख जाने की अपनी लंबे समय की इच्छा को व्यक्त किया और बताया कि उन्होंने अपने अभियान के दौरान कहा है कि अगर वह सिक्योंग चुनाव जीतते हैं तो वह सबसे पहले लद्दाख की आधिकारिक यात्रा करेंगे। उन्होंने अनौपचारिक बैठक के प्रतिभागियों का उनके सामने आने वाली कठिनाइयों और चुनौतियों को व्यक्त करने के लिए स्वागत किया और उनसे यह भी पूछा कि स्थानीय और केंद्रीय सरकार ने कठिनाइयों को हल करने के लिए क्या किया है। उन्होंने आगे उनसे तिब्बती इतिहास और तिब्बती चार्टर के अध्ययन के महत्व पर प्रकाश डाला और उनसे इसका अध्ययन करने का आग्रह किया।

अपने कशाग के मुख्य उद्देश्यों की व्याख्या करते हुए, उन्होंने कहा कि सिक्योंग के रुप में उनके तीन मुख्य लक्ष्य हैं। इनमें पहला परम पावन दलाई लामा द्वारा परिकल्पित पारस्परिक रुप से लाभप्रद मध्यम मार्ग दृष्टिकोण के आधार पर तिब्बत मुद्दे को हल करने के लिए चीन-तिब्बत वार्ता की बहाली, दूसरा तिब्बती जनता और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के बीच सहयोग-संपर्क को और मजबूत करके निर्वासित तिब्बतियों के कल्याण के लिए काम करना और अंत में तीसरा विश्व नेताओं और राजनयिकों से मिलकर वैश्विक मंच पर तिब्बत मुद्दे को मजबूत करना है।

सिक्योंग ने स्थानीय तिब्बती नेताओं को स्थानीय प्रशासन और गणमान्य व्यक्तियों के साथ फलदायक संबंध बनाए रखने की भी सलाह दी। उन्होंने आगे भविष्य की परियोजनाओं की योजना बनाने से पहले स्थानीय स्थिति को समझने के महत्व पर जोर दिया, विशेष रूप से क्षेत्र की आबादी और जनता के बीच परियोजनाओं के लाभों के बारे में जागरुकता पैदा करने के लिए अभियान चलाने पर जोर दिया।

अगले दिन २२ अगस्त को सिक्योंग ने तीन मठों और सोनमलिंग तिब्बती बस्ती के १२ शिविरों का दौरा किया और उसके बाद मख्यू और चुशुल खानाबदोश बस्तियों का दौरा किया। उन्होंने सैनिक तेनज़िन न्यिमा के परिवार के सदस्यों से मुलाकात की, जो पिछले साल भारत-चीन संघर्ष के दौरान शहीद हो गए थे। इसके बाद उन्होंने बेसहारा और बुज़ुर्ग तिब्बतियों और सोनमलिंग बस्ती के शिविर नेताओं से मुलाकात की। उन्होंने शिविर के नेताओं को आश्वासन दिया कि वह 'लद्दाख पर्वतीय परिषद' के नेताओं और लद्दाख के संसद सदस्य के साथ अपनी बैठक के दौरान उनकी शिकायतों को उठाएंगे। उन्होंने सीटीए की निरंतर सहायता और समर्थन का भी आश्वासन दिया।

बैठकों के दौरान, सिक्योंग ने जनता को उन कार्यों के बारे में बताया, जिन पर उन्होंने सिक्योंग की जिम्मेदारी संभालने के बाद से पिछले ढाई महीनों में ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने कहा कि उन्होंने जिन दो मुख्य कार्यों पर ध्यान केंद्रित किया है, वे हैं चीन-तिब्बत वार्ता की बहाली और तिब्बती जनता, विशेषकर गरीबों और बुजुर्गों की सेहत की देखभाल करना। उन्होंने कहा कि यदि वे इन दो कार्यों को पूरा कर सकते हैं, तो वे परम पावन दलाई लामा की आकांक्षाओं को पूरा करेंगे। सिक्योंग ने शाम को एग्लिंग में टीसीवी शाखा स्कूल का दौरा किया।

अगले दिन २३ अगस्त को, सिक्योंग ने नागरी मठ का दौरा किया और प्रार्थना की। सुबह ०९:१५ बजे, सिक्योंग ने भारतीय संसद के पूर्व सदस्य और लद्दाख बौद्ध संघ के अध्यक्ष थुप्टेन त्सेवांग से उनके आवास पर मुलाकात की। उनके साथ मुख्य प्रतिनिधि, स्थानीय तिब्बती सभा के अध्यक्ष, टीसीवी स्कूल के निदेशक, सहकारी समिति के अध्यक्ष और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के निदेशक भी थे। इसके बाद उन्होंने लद्दाख में जोखांग मठ का दौरा किया, जहां सिक्योंग के लिए एक भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया था। स्वागत के बाद, सिक्योंग ने लद्दाख से भारतीय संसद के माननीय सदस्य जमयांग त्सेरिंग नामग्याल से उनके आवास पर मुलाकात की। इसके बाद उन्होंने उपायुक्त श्री श्रीकांत बालासाहेब सुसे से उनके सरकारी आवास पर मुलाकात की।

• सिक्योंग ने शहीद तिब्बती सैनिक न्यिमा तेनजिंग की स्मारक प्रतिमा का उद्घाटन किया

tibet.net, ३० अगस्त, २०२१

धर्मशाला। सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग ने आज ३० अगस्त की सुबह ९ बजे सुरक्षा विभाग, सीटीए द्वारा सैनिक न्यिमा तेनजिंग की स्मारक प्रतिमा के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की। उनके साथ सचिव कर्मा रिनचेन, सुरक्षा विभाग के कर्मचारी और मीडियाकर्मी भी शामिल हुए।

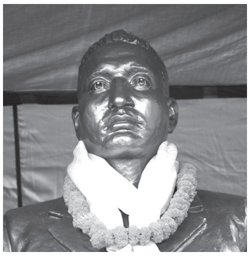

शहीद तिब्बती सैनिक नीमा तेनजिंग की स्मारक प्रतिमा

एक दिन पहले लद्दाख के लेह और झांगथांग क्षेत्रों की अपनी आधिकारिक यात्रा के समापन के बाद यहां पहुंचे सिक्योंग ने समारोह के महत्व पर मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि शहीद न्यिमा तेनजिंग भारत-चीन सीमा विवाद के कारण एक साल पहले शहीद हो गए थे, जब वह ऊंचाइयों पर स्थित सीमाओं पर गश्त कर रहे थे। सूचना के अनुसार, एक बारूदी सुरंग पर पैर पड़ने के बाद न्यिमा तेनजिंग ने खुद का और अपने साथ ड्यूटी पर तैनात दो अन्य सैनिकों का जीवन बलिदान कर दिया।

सिक्योंग ने दिवंगत सैनिक के परिवार के सदस्यों के साथ अपनी बैठक की जानकारी दी। इस बार उनकी लद्दाख यात्रा के दौरान स्थानीय तिब्बती सभा के नेतृत्व में स्थानीय लोगों ने शहीद की प्रतिमा के अनावरण समारोह की व्यवस्था की थी।

भारतीय सेना के बैनर तले एकजुटता में लड़ रहे सभी बहादुर तिब्बती सैनिकों के सम्मान में सिक्योंग ने टिप्पणी की, 'न्यिमा तेनजिंग भारत की सुरक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान करने वाले पहले व्यक्ति नहीं थे। १९७१ के भारत-पाकिस्तान युद्ध के अलावा कारगिल युद्ध के दौरान तिब्बती सैनिकों ने भारतीय सेना के लिए योगदान और बलिदान दिया है। स्वर्गीय न्यिमा तेनजिंग की स्मारक प्रतिमा उन सभी तिब्बती सैनिकों की याद में बनाई गई है जो भारत की सुरक्षा के लिए शहीद हो चुके हैं।'

• केवल लोगों का विवेक चीनी कठोर नीति की पूर्ण अस्वीकृति का कारण बन सकता है

tibet.net, १० अगस्त, २०२१

०८ अगस्त २०२१। भारत-तिब्बत संवाद मंच की कोर कमेटी के सदस्यों ने कंट्री क्लब, बेगमपेट, हैदराबाद में दक्षिण क्षेत्र समन्वय बैठक का आयोजन किया था। इस बैठक में दक्षिण के छह राज्यों- आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, पुडुचेरी और केरल के प्रतिनिधियों के साथ ही स्थानीय समर्थक भी शामिल हुए।

भारत तिब्बत संवाद मंच - दक्षिणी क्षेत्र के सदस्य

बैठक का आयोजन चीनी कम्युनिस्ट नीति के विरोध के लिए और अधिक ऊर्जा को इकट्ठा करने, इसकी गति को और तेज करने और विस्तार देने के इरादे से किया गया था। चीन भारतीय सीमा में अवैध सैनिक घुसपैठ कराने के साथ-साथ भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास की राह में कुआं खोदने की कोशिश कर रहा है।

बैठक में मुख्य अतिथि तेलंगाना के दुबाका क्षेत्र से विधायक श्री एस. रघुनंदन राव; आरएसएस के तेलंगाना प्रांत प्रचारक श्री देवेंद्रजी; स्वामी नारायण गुरुकुल के मुख्य समन्वयक जसमत पटेल; भारत-तिब्बत संवाद मंच दक्षिणी क्षेत्र के अध्यक्ष पी. चंद्रशेखर; भारत-तिब्बत संवाद मंच के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. संजय शुक्ला; संत परिपूर्णानंद स्वामी और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

बैठक का आयोजन रिएल फूड लिमिटेड के अध्यक्ष और भारत तिब्बत-संवाद मंच के अंतरराष्ट्रीय संयोजक तथा दार एस. सलाम, तंजानिया के सत्यनारायण पिट्टाला के नेतृत्व में तीन सत्रों में किया गया था। श्री सत्यनारायण ने इस अवसर पर जोर देकर कहा कि चीन को उसके उत्पादों में आर्थिक विनिवेश को रोककर और विकसित देशों में आर्थिक पक्षाघात पैदा करने के चीन के छिपे हुए कठोर एजेंडे के बारे में उचित जानकारी का प्रचार-प्रसार करके ही रोका जा सकता है। इसलिए, उन्होंने आगे कहा कि उनकी कंपनी ने इस मुद्दे को उठाने का फैसला किया है जिससे चीनी कम्युनिस्ट शासन के वित्तीय बाजारों में बाधा आ सकती है।

दुबाका से माननीय विधायक श्री. रघुनंदन राव ने प्रतिभागियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि सभी को चीनी नीतियों के खिलाफ विरोध को मजबूती प्रदान करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। ये चीनी नीतियां केवल स्वार्थ के साथ तैयार की गई हैं और मानवता और सह-अस्तित्व के मूल्यों की अवहेलना कर रही हैं। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि दक्षिण भारत के लोगों को इस विरोध को दर्ज करने में पीछे नहीं रहना चाहिए और चीन ने पहले तिब्बत के भाग्य के साथ अब हांगकांग, ताइवान और अन्य देशों के साथ जो किया है, उसके बारे में उचित जानकारी प्रसारित करने के लिए दक्षिणी राज्यों के दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुंचना चाहिए।

संत परिपूर्णानंद स्वामी जी ने कैलाश पर्वत की अपनी व्यक्तिगत यात्रा और चीनी सेना द्वारा इसके नियंत्रण की दुर्भाग्यपूर्ण वास्तविकता के बारे में बताया। उन्होंने आश्वासन दिया कि वह दिन दूर नहीं जब भारतीय एक बार फिर तिब्बत को मुक्त कराकर तीर्थयात्रा के लिए कैलाश जा सकते हैं। इस बात के लिए उन्होंने सभी प्रतिभागियों से आग्रह किया कि वे सत्य की इस लौ को जीवित रखें जो अन्याय और झूठ के जाल को नष्ट कर सकती है। बैठक में छह दक्षिण भारतीय राज्यों के प्रतिनिधियों सहित दो सौ से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

• भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों की नागपुर में बैठक

tibet.net, १२ अगस्त, २०२१

११ अगस्त, २०२१। चीनी कम्युनिस्ट सरकार की गलत नीतियों के विरोध की तेजी से भड़क रही आग का प्रतिबिंब महाराष्ट्र के नागपुर में आयोजित भारत स्थित तिब्बत समर्थक समूहों की बैठक में इसके सदस्यों की भागीदारी में परिलक्षित हुई। चीन की गलत और वर्चस्ववादी नीतियां उसके पड़ोसी देशों में शांति और सद्भाव को बाधित कर रही है। विशेष रुप से देखा जा रहा है कि कैसे इसने बल और विश्वासघात के सहारे तिब्बत पर अवैध रुप से कब्जा कर लिया और अब यह कैसे अपने कठोर कदमों से भारत की अखंडता पर काली छाया बनकर मंडरा रहा है।

नागपुर में भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों की बैठक

'कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज़- इंडिया' के राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री अरविंद निकोसे और क्षेत्रीय संयोजक श्री संदेश मेश्राम ने भारत-तिब्बत मैत्री संघ के बैनर तले इस बैठक की पहल की थी। दुर्भाग्य से, अपने स्वास्थ्य कारणों से श्री निकोसे इस बैठक में शामिल नहीं हो सके। जबकि समता सैनिक दल, भारत- तिब्बत सहयोग मूवमेंट और इंडो-तिब्बत फ्रेंडशिप सोसाइटी- महिला विंग सहित अन्य सभी संगठनों के वरिष्ठ प्रतिनिधि दुनिया भर में कई विकासशील देशों की रीढ़ की हड्डी को तोड़ देने वाले चीन के निहित स्वार्थ परक निवेश नीतियों के खिलाफ विरोध दर्ज कराने के लिए एक साथ नागपुर बैठक में पहुंचे।

कार्यक्रम की शुरुआत में उन सभी सदस्यों के प्रति संक्षिप्त शोक व्यक्त किया गया, जिनका इस यात्रा के दौरान और विशेष रुप से मौजूदा महामारी के पहले और दूसरे चरण के दौरान निधन हो गया। आईटीसीओ के समन्वयक ने सभा को इसके उद्देश्य और चीनी कम्युनिस्ट नीतियों के कुकृत्यों के खिलाफ जागरुकता और विकराल हो रहे विरोध के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कितने व्यक्तियों, गैर सरकारी संगठनों और यहां तक कि सरकारी संस्थाओं ने इस बार परम पावन १४वें दलाई लामा के ८६वें जन्मदिन समारोह को मनाया है। इसकी अगर पूरी सूचना दी जाए तो कम समय में यह चुनौतीपूर्ण कार्य होगा। दूसरे शब्दों में उन्होंने जोर देकर कहा कि यह चीनी सरकार के अन्याय को खत्म करने और तिब्बती लोगों के लिए सत्य के उदय का प्रतिबिंब है। उन्होंने कुछ हालिया रिपोर्टों, कार्यक्रमों और भविष्य की पहलों के

बारे में भी जानकारी दी, जिनकी योजना मौजूदा महामारी की स्थिति के बावजूद इसके एसओपी के अनुरूप बनाई गई है।

'कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया' के सह समन्वयक और नेशनल कंपेन फॉर फ्री तिब्बत के संस्थापक श्री अरविंद निकोसे की अनुपस्थिति में भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) के महाराष्ट्र राज्य के महासचिव श्री अमृत बंसोड़ से बैठक की अध्यक्षता करने का अनुरोध किया गया, जिसे उन्होंने स्वीकार किया। श्री बंसोड़ ने प्रतिभागियों से संगठन के वैचारिक मतभेदों के बावजूद एकजुट होकर चीनी सरकार की उन बर्बर, विस्तारवादी और लोलुप नीतियों के खिलाफ खड़े होने का आग्रह किया, जिसने तिब्बती लोगों के जीवन को नरक बना दिया है।

बैठक में भाग लेने वाले अन्य सदस्यों में आईटीएफएस की ओर से श्री राजेश नानवाटकर, श्री. प्रशांत डोय, श्री. अशोक धमगाये, श्री. सचिन रामटेके, डॉ. निलय वाई. चर्दे, श्री. राजीव घिरनिकर, सुश्री हर्षा पाटिल, श्रीमती मंजूषा गोटेकर, श्रीमती माधुरी रंगारी ने भाग लिया तो भारत-तिब्बत सहयोग मूवमेँट की ओर से प्रो. विजय केवलरमानी, श्रीमती सपना तलरेजा, श्री जसविंदर सिंह सैनी, श्री विराग राउत; आईटीएफएस- महिला विंग की ओर से श्रीमती रेखा लोखंडे, पं. मीरा सरदार, श्रीमती सुनंदा खैरकर; समता सैनिक दल की ओर से श्री सुनील सारिपुत्र दार्शनिक विचारों के आदान-प्रदान और भविष्य की पहल की रणनीति बनाने के उत्साह के साथ बैठक में शामिल हुए। बैठक नागपुर के घाट रोड स्थित होटल वृंदावन में आयोजित की गई। बैठक के समापन के बाद प्रेस क्लब के तिलक पत्रकार भवन, पंचशील स्क्वायर, नागपुर में प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। प्रेस कॉन्फ्रेंस को आईटीएफएस-महाराष्ट्र राज्य के महासचिव श्री अमृत बंसोड़; कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक श्री संदेश मेश्राम और आईटीसीओ के समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्त्रिम ने संबोधित किया। एक घंटे तक चली प्रेस वार्ता के दौरान चीनी नस्ल वाली आबादी के साथ तिब्बती आबादी का बर्बरतापूर्वक एकीकरण, तिब्बत के इतिहास और संस्कृति का संहार, ११वें पंचेन लामा का भविष्य और उनके बारे में जानकारी की गोपनीयता, चीनी तथाकथित विकास परियोजनाओं के कारण तिब्बत की पर्यावरणीय विनाश, चीन-तिब्बत संवाद की बहाली, परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म के चयन में चीनी हस्तक्षेप और भारत-तिब्बत संबंधों सहित कभी न खत्म होने वाली चीनी क्रूरताओं के बारे में चर्चा की गई। प्रेस कांफ्रेंस में मुख्य धारा के इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट दोनों तरह के मीडिया की उपस्थिति देखी गई।

• तिब्बत पर निरंतर समर्थन के लिए धर्मशाला के तिब्बतियों ने स्थानीय गणमान्य नागरिकों को धन्यवाद दिया

tibet.net, १२ अगस्त, २०२१

धर्मशाला। तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी कुंगा त्सेरिंग के नेतृत्व में धर्मशाला के तिब्बतियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने ०९ अगस्त २०२१ को तिब्बत और तिब्बती लोगों के प्रति निरंतर समर्थन के लिए आभार प्रकट करने के लिए कई स्थानीय भारतीय गणमान्य नागिरकों को आमंत्रित किया। स्थानीय भारतीय गणमान्य नागरिकों में प्रो. श्री परमानंद शर्मा, श्री विजय सिंह मनखोटिया और श्री राम स्वरुप शामिल रहे।

श्री विजय सिंह मनखोटिया जी के साथ तिब्बती प्रतिनिधिमंडल।

प्रो. श्री परमानंद शर्मा लेखक हैं और धर्मशाला के कचेरी के शासकीय महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य रह चुके हैं। परम पावन दलाई लामा के मार्गदर्शन के अनुसार उन्होंने तिब्बत पर हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत आदि में कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं। श्री विजय सिंह मनखोटिया पूर्व मंत्री, विधायक और सेना में मेजर रह चुके हैं और परम पावन दलाई लामा के अच्छे मित्र हैं। श्री राम स्वरुप परम पावन दलाई लामा के बहुत बड़े प्रशंसक हैं। वह भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफए) धर्मशाला के अध्यक्ष और संस्थापक सदस्य रहे हैं और वर्तमान में वे आईटीएफए के वरिष्ठ सलाहकार हैं।

१९५९-६० के आसपास परम पावन महान १४वें दलाई लामा के धर्मशाला आगमन के बाद से प्रसिद्ध तिकड़ी तिब्बतियों की मित्र बन गई।

सेटलमेंट अधिकारी कुंगा त्सेरिंग के नेतृत्व वाले तिब्बती प्रतिनिधिमंडल में तिब्बती डेलेक अस्पताल के मुख्य प्रशासक एमपी दावा फुनकी; योंगलिंग स्कूल के निदेशक एमपी दावा त्सेरिंग; रिजनल तिब्बतन फ्रीडम मूवमेंट के अध्यक्ष समतेन ल्हुंदुप; नेचुंग मठ के तांत्रिक गुरु वेन सोनम डाकपा; तिब्बती ट्रांजिट स्कूल की प्रिंसिपल न्यिमा भूटी; मैक्लोड शॉपकीपर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष त्सेरिंग यांगज़ोम; आईटीएफए के पीआरओ थुप्टन लामा और रिजनल तिब्बतन वूमेंस एसोसिएशन की अध्यक्ष तेनज़िन न्यिमा शामिल हैं।

• लंबे समय से तिब्बत समर्थक रहे श्री श्याम गंभीर का तिब्बती गैर सरकारी संगठनों और मजनूं का टीला व बुद्ध विहार के एसोसिएशन ने अभिनंदन किया

tibet.net, २३ अगस्त, २०२१

दिल्ली के निर्वासित तिब्बती समुदाई ने श्री श्याम गंभीर जी को अभिनन्दन किया

भारतीय जनता में तिब्बती आंदोलन की जड़ों को फिर से मजबूत करते हुए भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) ने शुक्रवार, २० अगस्त २०२१ को सम्येलिंग तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय, मजनुं का टीला में श्री श्याम गंभीर जी के

सम्मान में तिब्बती सेटलमेंट ऑफिस हॉल में एक बैठक सह अभिनंदन समारोह का आयोजन किया। श्री गंभीर भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) दिल्ली चैप्टर के वरिष्ठ सदस्यों में से एक हैं और लंबे समय से तिब्बत समर्थक रहे हैं।

आईटीसीओ समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्त्रिम ने परिचयात्मक भाषण दिया और सदस्यों को उन व्यक्तियों के योगदान और समर्पण को पहचानने और सराहना करने के बारे में जानकारी दी जो हमेशा तिब्बत मुद्दों का समर्थन करने में सबसे आगे रहे हैं। साथ ही उनके संघर्षों और अनुभवों को सुनना और सीखना भी था, जो तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन की यात्रा में युवा पीढ़ी के लिए सहायक होगा।
श्री श्याम गंभीर और उनकी पत्नी श्रीमती रेणु गंभीर- दोनों आईटीएफएस दिल्ली चैप्टर की वरिष्ठ सदस्य हैं और लंबे समय से तिब्बत के समर्थक और मित्र रहे हैं, जो अपना समय और पसीना तिब्बती मुद्दों के लिए समर्पित करते रहे हैं। फिलहाल श्रीमती रेणु गंभीर की तबीयत खराब है और उनका इलाज चल रहा है।

श्री गंभीर ने अपने संबोधन में लंबे समय से तिब्बती हित के लिए काम करने की अपनी भावनाओं और अनुभव के बारे में बताया। वे ८० के दशक से तिब्बत मुक्ति साधना से जुड़े, जिस समय महान हस्तियां थीं, जो हमेशा तिब्बत का समर्थन करने में सबसे आगे रहती थीं। श्री गंभीर ने उल्लेख किया कि उस समय के तिब्बत समर्थकों में आज की तुलना में समर्पण और जोश बहुत अधिक था। उन्होंने जोर देकर कहा कि तिब्बत मुक्ति साधना की ज्योति को तिब्बत मुक्त होने तक जलते रहना बहुत जरूरी है। उन्होंने आगे भारतीयों और तिब्बतियों के बीच संबंधों को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि निश्चित रूप से तिब्बती मुद्दों के लिए भारतीय समर्थन की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है।
मजनुं का टीला और बुद्ध विहार के तिब्बती समुदाय की ओर से तिब्बती गैर सरकारी संगठनों और सम्येलिंग तिब्बती सेटलमेंट, मजनुं का टीला और बुद्ध विहार के संघों के प्रतिनिधियों ने श्री श्याम गंभीर और श्रीमती रेणु गंभीर (अनुपस्थिति में) को तिब्बती मुद्दे के प्रति उनके आजीवन समर्पण और अथक समर्थन के लिए सम्मानित किया। सदस्यों ने तिब्बत मुक्ति साधना की सेवा के लिए समर्पण और उनके मार्गदर्शक उद्बोधन के लिए श्री गंभीर को हार्दिक धन्यवाद दिया।

बैठक सह अभिनंदन कार्यक्रम में आईटीसीओ समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्त्रिम, टीएसओ श्री फुंतसोक तोपग्याल, १७ तिब्बती गैर सरकारी संगठनों, मजनुं का टीला और बुद्ध विहार के सम्येलिंग तिब्बती सेटलमेंट के एसोसिएशनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

• भारत-तिब्बत मैत्री संघ ने 'परम पावन दलाई लामा का भारत को योगदान' विषय पर वेबिनार किया

tibet.net, २४ अगस्त, २०२१

२३ अगस्त २०२१, दिल्ली। परम पावन १४वें दलाई लामा को दुनिया भर में शांति, प्रेम, करुणा, क्षमा, अहिंसा आदि मानवीय गुणों के प्रतीक के तौर पर सम्मानित किया जाता है। उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों द्वारा प्यार और सम्मान दिया जाता है। इसी तरह दुनिया को उनका योगदान बहुत बड़ा है। खासकर भारत के लिए, जहां वे पिछले छह दशकों से रह रहे हैं। इसलिए वह खुद को भारत का सबसे लंबा मेहमान मानते हैं। परम पावन दलाई लामा के योगदान को याद करते हुए और उनका सम्मान करते हुए भारत के सबसे पुराने तिब्बत समर्थक समूहों में से एक 'भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस)' ने रविवार, २२ अगस्त को ५:०० बजे से शाम ७:०० बजे तक 'परम पावन दलाई लामा का भारत को योगदान' शीर्षक से एक वेबिनार का आयोजन किया।

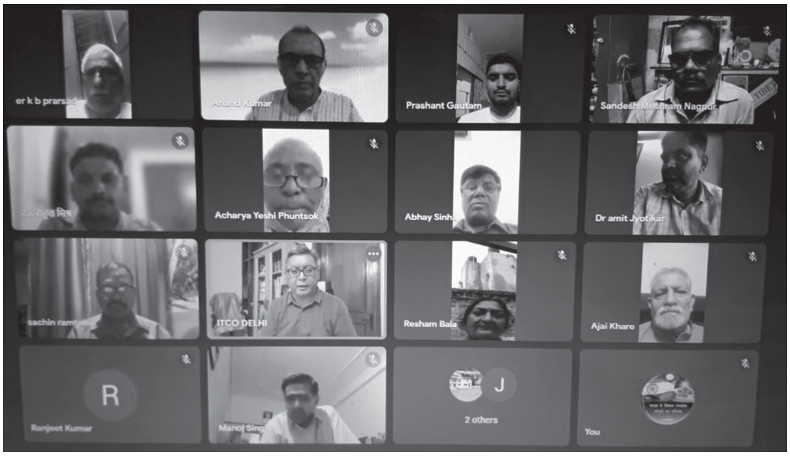

भारत तिब्बत मैत्री संघ द्वारा आयोजित वेबिनार

वेबिनार की शुरुआत में आईटीएफएस के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. आनंद कुमार ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और मुख्य भाषण दिया। अपने संबोधन में डॉ. कुमार ने परम पावन १४वें दलाई लामा के सामान्य रूप से विश्व और विशेष रूप से भारत के लिए योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने परम पावन के निर्वासन के प्रारंभिक दिनों से लेकर अब तक के जीवन के बारे में जानकारी देते हुए भारत में उनके वृहद योगदान को याद किया। उन्होंने बताया कि परम पावन दलाई लामा ने अंतरराष्ट्रीय मंचों से अहिंसा, करुणा, दया, क्षमा, धैर्य, संतोष और आत्म-अनुशासन के भारतीय मूल्यों को प्रचारित करने और दुनिया के लिए भारत के 'अतिथि देवो भव' के संदेश को सही ढंग से प्रस्तुत करने में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

डॉ. कुमार ने कहा कि परम पावन दलाई लामा के मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने, धार्मिक सद्भाव, तिब्बती संस्कृति और पर्यावरण की सुरक्षा और नालंदा परंपरा के प्राचीन ज्ञान के पुनरुद्धार ने समाज के लिए बहुत योगदान दिया है। साथ ही, हर किसी की इच्छा के लिए होनेवाले संघर्षों का समाधान संवाद से करने पर जोर दिया। उनके अनुसार इस तरह के संघर्ष वैमनस्य की कोटि में नहीं आते हैं।

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर के वरिष्ठ आईटीएफएस सदस्य धर्म और दर्शनशास्त्र के विशेषज्ञ आचार्य रोशन लाल नेगी ने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि परम पावन दलाई लामा ने भारत में बौद्ध धर्म के पुनरुद्धार में विशेष रूप से नालंदा की प्राचीन परंपरा पर ध्यान केंद्रित करने में बहुत योगदान दिया है। यह परम पावन की कृपा है कि पूरे भारत में, विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र में बौद्ध शिक्षा के केंद्र फल-फूल रहे हैं। आचार्य नेगी ने आगे कहा कि आज की दुनिया में हर कोई शांति की तलाश में है और इसका अंतिम स्रोत परम पावन दलाई लामा हैं।

• उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले में तिब्बती आंदोलन को मजबूत करने के लिए कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया का अभियान

tibet.net, ३० अगस्त २०२१

वर्तमान के बहुत ही अहम समय में 'तिब्बत मुक्ति साधना' की लौ को फिर से प्रज्वलित करने और मजबूत करने के उद्देश्य से भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) का अभियान 'कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया (सीजीटीसी-आई)' के साथ समन्वय में चल रहा है। इसी क्रम में आईटीसीओ उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले में स्थित तिब्बत समर्थक समूहों से मिलकर तिब्बती आंदोलन के लिए साथ काम करने और इसके लिए संबंधित क्षेत्रों में स्थित तिब्बती समुदायों से समन्वय का काम कर रहा है।

देहरादून में तिब्बती सदस्यों के साथ तिब्बत समर्थक समूहों

२६ अगस्त २०२१ को अभियान शुरू करते हुए कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के राष्ट्रीय सह-समन्वयक श्री सुरेंद्र कुमार और आईटीसीओ समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्त्रिम ने उत्तराखंड के तिब्बत समर्थक समूहों के साथ देहरादून स्थित तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय के समन्वय में एक बैठक का आयोजन पोटाला कम्युनिटी हॉल, डेक्येलिंग तिब्बती सेटलमेंट, देहरादून में किया। बैठक में उत्तराखंड के तिब्बत समर्थक समूह के सदस्य सरदार इंद्रपाल सिंह कोहली; भारत-तिब्बत मैत्री संघ - देहरादून के संयोजक डॉ. रामचंद्र उपाध्याय; देहरादून के तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल (सेवानिवृत्त) नोरबू के अलावा देहरादून में तिब्बती गैर सरकारी संगठनों और एसोसिएशनों के सदस्य उपस्थित हुए। इनमें डेक्येलिंग, राजपुर, धोंडुपलिंग क्लेमेंट टाउन और त्सेरिंग ढोंडेनलिंग रायपुर के सदस्य शामिल हैं।

२७ अगस्त २०२१ को श्री सुरेंद्र कुमार और श्री जिग्मे त्सुल्त्रिम ने हरबर्टपुर में डोएगू युगालिंग तिब्बती बस्ती का दौरा किया और तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय, हरबर्टपुर के समन्वय से वहां एक बैठक की। बैठक में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के विशेषज्ञ सलाहकार और तिब्बत समर्थक भारतीय नागरिक श्री एम.के. ओटानी; तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी श्री त्सुल्ट्रिम दोरजी के अलावा लखनवाला, बालूवाला, खेड़ा कैंप और हरबर्टपुर में तिब्बती गैर सरकारी संगठनों और डोएगू युगालिंग तिब्बती बस्ती के एसोसिएशनों के सदस्य शामिल हुए।

२७ अगस्त २०२१ की दोपहर प्रतिनिधिमंडल हिमाचल प्रदेश के पांवटा साहिब पहुंचा, जहां पांवटा साहिब, पुरुवाला, सतौन और कुमराव की चार तिब्बती बस्तियों के टीएसओ, तिब्बती गैर सरकारी संगठनों और एसोसिएशनों के सदस्यों द्वारा उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। बाद में शाम को हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले में पांवटा साहिब, पुरुवाला, सतौन और कुमराव के तिब्बती सेटलमेंट कार्यालयों के समन्वय में तिब्बत समर्थक समूहों की एक बैठक होटल यमुना, पांवटा साहिब में आयोजित की गई। बैठक में भारत-तिब्बत मैत्री संघ- सिरमौर के अध्यक्ष डॉ. मदन लाल खुराना; आईटीएफएस- सिरमौर के महासचिव श्री गीता राम ठाकुर; पांवटा साहिब, पुरुवाला और सतौन के आईटीएफएस सदस्य; पोंटा चोलसुम, पुरुवाला, सतौन और कुमराव के तिब्बती गैर सरकारी संगठनों और एसोसिएशनों के सदस्य उपस्थित रहे।

देहरादून, हरबर्टपुर और पांवटा साहिब में आयोजित बैठकों की इन श्रृंखलाओं के दौरान, आईटीसीओ समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्त्रिम ने तिब्बत मुक्ति साधना की लौ को फिर से प्रज्वलित करने और मजबूत करने के लिए आयोजित बैठक के उद्देश्यों को सदस्यों के सामने रखा और उन पर प्रकाश डाला। साथ ही इस संबंध में भारत के तिब्बत समर्थक समूहों के समर्थन और सहायता के महत्व को रेखांकित किया।

बैठकों के दौरान श्री सुरेंद्र कुमार ने सदस्यों को डॉ. राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण और अन्य भारतीय नेताओं के नेतृत्व में तिब्बत मुक्ति साधना के शुरुआती दिनों की यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि इन नेताओं ने तिब्बत मुक्ति साधना को बहुत पवित्र माना था और इस बात पर जोर दिया था कि तिब्बती आंदोलन का समर्थन करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। उन्होंने कोरोना महामारी के बाद भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय के समन्वय में कोर ग्रुप फॉर तिब्बती कॉज- इंडिया द्वारा तिब्बत मुक्ति साधना की ज्योति को प्रज्वलित करने और मजबूत करने के लिए ओडिशा, असम, अरुणाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना और महाराष्ट्र में अब तक की गई गतिविधियों और कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया। श्री कुमार ने भारत की सुरक्षा के लिए तिब्बत की स्वतंत्रता के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत-चीन के बीच कोई सीमा रेखा नहीं है बल्कि जो सीमा है वह भारत-तिब्बत के बीच की सीमा है। तिब्बत पर अवैध और जबरदस्ती कब्जे के कारण ही चीन

निर्वासित तिब्बती संसद के पूर्व उपाध्यक्ष आचार्य येशी फुंट्सोक ने लद्दाख की नुब्रा घाटी से वेबिनार में भाग लेते हुए परम पावन दलाई लामा की चार मुख्य प्रतिबद्धताओं के बारे में बताया, जिसके माध्यम से परम पावन मानवता के उद्देश्यों को बढ़ावा देते हैं। आचार्य फुंट्सोक ने परम पावन द्वारा मजबूत भारतीय संबंधों को निरंतर बनाए रखने को इन शब्दों में याद किया, जिसे अक्सर परम पावन उद्धृत करते रहते हैं, 'मैं भारत का पुत्र हूं। मेरा शरीर भारतीय दाल और रोटी से बना है।' परम पावन दलाई लामा का जन्म तिब्बत में हुआ था और वहीं पर उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। हालांकि, उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय भारत में निर्वासन में बिताया, जो उनका दूसरा घर रहा है।

आईटीएफएस सदस्यों ने वेबिनार के दौरान भारत में परम पावन दलाई लामा के योगदान पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस दौरान कई लोगों ने कहा कि परम पावन दलाई लामा अपने आप में भारत के लिए एक अनमोल उपहार हैं और उन्होंने परम पावन के दर्शन को अपने लिए सौभाग्य माना। इसके साथ लोगों ने परम पावन के लंबे नेतृत्व में तिब्बत मुद्दे का आजीवन समर्थन करने में गर्व का अनुभव किया।

आईटीसीओ समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्त्रिम ने भी इस अवसर पर अपनी बात रखी और सदस्यों को 'तिब्बत मुक्ति साधना' की लौ को मजबूत करने और फिर से प्रज्वलित करने के लिए हाल के दिनों में की जा रही गतिविधियों और कार्यक्रमों की नवीनतम जानकारी दी। उन्होंने वेबिनार के आयोजन के लिए भारत-तिब्बत मैत्री संघ और तिब्बत मुक्ति साधना की यात्रा में साथ आने और समर्थन करने के लिए सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया।

वहां मौजूद है। उन्होंने सभी से अनुरोध किया कि वे इस तथ्य का पालन करें और किसी भी संदर्भ में 'भारत-तिब्बत सीमा' शब्दावली का ही उपयोग करें और भारत सरकार पर भी इसी शब्दावली का उपयोग करने के लिए दबाव डालें।

श्री कुमार ने आगे कहा कि भारत के तिब्बत समर्थक समूहों को तिब्बत के लिए मजबूत समर्थन बनाने के लिए भारतीय जनता को तैयार करना है और साथ ही, भारतीय लोगों को सरकार पर उचित रुख अपनाने और तिब्बत पर दृढ़ नीतियां बनाने के लिए दबाव डालना है। उन्होंने तिब्बत मुक्ति साधना को अपना पूर्ण समर्थन देने का आश्वासन दिया और कहा कि तिब्बत की स्वतंत्रता एक सच्चाई है और तिब्बत निश्चित रुप से एक दिन आजाद होकर रहेगा।

डॉ. रामचंद्र उपाध्याय ने बताया कि भारत और तिब्बत के बीच सदियों पुराने संबंध हैं और तिब्बत का समर्थन करना भारत का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में चीन शक्तिशाली है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम कुछ नहीं कर सकते। हमें कोशिश करते रहना है क्योंकि एक दिन सच्चाई की जीत होगी और तिब्बत आजाद हो जाएगा। उन्होंने भारतीय जनता के बीच तिब्बती आंदोलन और तिब्बत पर जन जागरुकता को मजबूत करने के लिए वातावरण बनाने का सुझाव दिया।

सरदार इंद्रपाल सिंह कोहली ने चीनी बाजार को कमजोर करने के लिए व्यक्तिगत रुप से और साथ ही सरकार की ओर से चीनी उत्पादों के बहिष्कार पर जोर दिया, जो परोक्ष रूप से भारत को नुकसान पहुंचा रहा है। उन्होंने तिब्बत के मुद्दे को उजागर करने और तिब्बती मुद्दे के लिए समर्थन और सहायता प्राप्त करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के सक्रिय उपयोग का सुझाव दिया। सरदार कोहली ने कहा कि हमारे जवान सीमा पर अपनी ड्यूटी कर रहे हैं और इसी तरह हम आम लोगों को भी देश में अपना कर्तव्य निभाना है।

डॉ. मदन लाल खुराना ने बताया कि हम कई दशकों से 'तिब्बत की आजादी- भारत की सुरक्षा' कह रहे हैं लेकिन उस पर कोई गंभीर कदम नहीं उठाया गया। अब समय आ गया है कि इसे शब्दों से आगे बढ़कर कार्यों में प्रमाणित किया जाए कि तिब्बत की स्वतंत्रता वास्तव में भारत की सुरक्षा है। उन्होंने कहा कि चीन किसी से नहीं डरता इसलिए हमारे पास एक ही विकल्प है कि हम उसका आर्थिक और कूटनीतिक बहिष्कार कर उसे कमजोर कर दें और फिर चीन बिखर जाएगा। डॉ. खुराना ने तिब्बतियों की सहनशीलता के लिए उनकी सराहना की और जल्द से जल्द तिब्बत की स्वतंत्रता के लिए प्रार्थना की।

श्री गीता राम ठाकुर ने कहा कि तिब्बती संस्कृति सुंदर और समृद्ध है और इसे सुरक्षित और संरक्षित करने की आवश्यकता है। उन्होंने तिब्बती और भारतीय युवाओं को समान गतिविधियों और कार्यक्रमों में एक साथ लाने और इससे तिब्बती आंदोलन को सशक्त बनाने का सुझाव दिया। श्री ठाकुर ने उल्लेख किया कि तिब्बत का समर्थन करके भारतीय स्वयं पर विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश का उपकार कर रहे हैं, क्योंकि यह तिब्बत के साथ सीधी सीमा साझा करता है।

बैठकों के दौरान, अन्य सदस्यों ने तिब्बत समर्थक समूहों के वरिष्ठ सदस्यों को ध्यान से सुना और तिब्बती मुद्दे का समर्थन करने के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए। भारत के तिब्बत समर्थक समूहों के सदस्यों ने इन बैठकों में विशेष रूप से पांवटा साहिब में बड़ी संख्या में भाग लिया।

प्रतिनिधिमंडल का ऋषिकेश में तिब्बत समर्थक समूहों के सदस्यों के साथ बैठक का कार्यक्रम क्षेत्र में लगातार बारिश होने से सड़क अवरुद्ध होने के कारण रद्द कर दिया गया था।

२८ अगस्त २०२१ को पांवटा साहिब से हरिद्वार जाते समय श्री सुरेंद्र कुमार और श्री जिग्मे त्सुल्त्रिम ने भारत-तिब्बत समन्वय संघ (पंजीकृत)- उत्तराखंड के सदस्यों- प्रो. प्रयाग दत्त जुयाल, पूर्व कुलपति, नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर और माननीय सदस्य, केंद्रीय सलाहकार समिति, बीटीएसएस; प्रो. विजय कौल, प्रख्यात साहित्यिक वैज्ञानिक और शिक्षाविद और उपाध्यक्ष, बीटीएसएस-उत्तराखंड; श्री मनोज गेहतोरी, महासचिव, बीटीएसएस-उत्तराखंड और श्री मोहन भट्ट, संगठन सचिव, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और देहरादून क्षेत्र- के साथ मुलाकात की।

अभियान के अंतिम चरण में २९ अगस्त २०२१ को श्री सुरेंद्र कुमार और श्री जिग्मे त्सुल्त्रिम ने हरिद्वार में पंतंजलि योगपीठ का दौरा किया और स्वामी परमार्थ देवजी, योगगुरु, पतंजलि विश्वविद्यालय से मुलाकात की, जिन्होंने हाल ही में २१ जून २०२१ को विश्व योग दिवस की पूर्व संध्या पर बीटीएसएस (पंजीकृत) द्वारा आयोजित एक वेबिनार में भाग लिया था। प्रतिनिधिमंडल ने स्वामी परमार्थ देवजी को आईटीसीओ की स्थापना और इसके उद्देश्यों के साथ-साथ भारत में पतंजलि योगपीठ और तिब्बती संस्थानों के बीच अकादमिक आदान-प्रदान के लिए भविष्य के अवसरों की खोज के बारे में जानकारी दी थी। स्वामी जी को १९५९ से भारत में विभिन्न भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों की समर्थन यात्रा के बारे में लिखित 'कम्युनिस्ट चाइना, हैंड्स ऑफ तिब्बत' शीर्षक से एक स्मारिका भेंट की गई।

यह अभियान सीजीटीसी-आई और आईटीसीओ द्वारा चलाए गए भारत के ज्ञात-अज्ञात तिब्बत समर्थक समूहों के सदस्यों से मिलने और बातचीत करने के अभियान में मददगार रहा है। ये समूह कई दशकों से तिब्बती हित के लिए स्वेच्छा से अथक परिश्रम कर रहे हैं। भारत के तिब्बत समर्थक समूहों के बीच तिब्बत मुक्ति साधना को मजबूत करने और इसकी लौ को फिर से प्रज्वलित करने का अभियान आने वाले दिनों में जारी रहेगा, जिससे कि तिब्बत मुक्ति साधना को और अधिक समर्थन और सहायता प्राप्त हो सके।

• ओओटी ताइवान के प्रतिनिधि ने ताइवान के पूर्व राष्ट्रपति चेन शुई बियान से मुलाकात की

tibet.net, ११ अगस्त २०२१

ताइपे। ताइवान स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि बावा केल्सांग ग्यालत्सेन ने मंगलवार, १० अगस्त को ताइवान के पूर्व राष्ट्रपति चेन शुई बियान से उनके आवास पर मुलाकात की। प्रतिनिधि केल्सांग ग्यालत्सेन के साथ ओओटी की सचिव सोनम दोरजी और गंगजोंग प्रिंटिंग प्रेस के निदेशक भी थे।

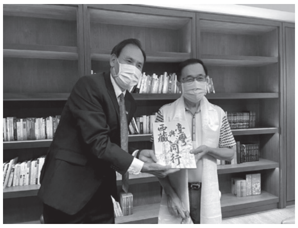

ताइवान के पूर्व राष्ट्रयपति के साथ मुलाकात करते निर्वासित तिब्बती प्रशासन के प्रधिनिधि

प्रतिनिधि द्वारा पूर्व राष्ट्रपति को औपचारिक तौर पर तिब्बती सफेद दुपट्टा भेंट किया गया। इस अवसर पर सचिव सोनम दोरजी ने यात्रा के पीछे के कारणों को समझाया। ओओटी के प्रतिनिधि अब तक लगातार पूर्व राष्ट्रपति से मिलते रहे हैं। हालांकि, कोविड- १९ महामारी के कारण प्रतिनिधि केल्सांग ग्यालत्सेन पूर्व राष्ट्रपति से मिलने नहीं जा सके थे। अब स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ है, इसलिए वह अब बधाई देने आए हैं।

पूर्व राष्ट्रपति चेन शुई बियान ने परम पावन दलाई लामा के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की और परम पावन दलाई लामा के ताइवान यात्रा को लेकर अपनी उत्कट अभिलाषा प्रकट की। उन्होंने कहा कि परम पावन विश्व प्रसिद्ध आध्यात्मिक व्यक्ति हैं और ताइवान में उनके बहुत सारे अनुयायी हैं। उन्होंने यह भी समझाया कि जब वह ताइवान के राष्ट्रपति थे, तो उन्होंने आधिकारिक तौर पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन को एक सरकार के रूप में मान्यता दी और उसके पहचान प्रमाण पत्र (आईसी) को मान्य किया। इस परंपरा ने ताइवानी सरकारों द्वारा इस पहचान पत्र के आधार पर तिब्बतियों को लगातार आधिकारिक वीजा देने के मामले में मिसाल कायम की।

प्रतिनिधि केल्सांग ग्यालत्सेन ने पूर्व राष्ट्रपति को परम पावन दलाई लामा के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी दी और उन्हें तिब्बत पर अमेरिकी सरकार द्वारा पारित तिब्बत नीति और समर्थन अधिनियम (टीपीएसए) से अवगत कराया। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति को हाल के सिक्योंग चुनाव, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन शब्द के महत्व, परम पावन दलाई लामा की चौथी प्रतिबद्धता- 'प्राचीन भारतीय ज्ञान का पुनरुद्धार' और ओओटी ताइवान की पहल, विशेष रूप से तिब्बत और तिब्बत से संबंधित विषयों पर गंगजोंग प्रिंटिंग प्रेस से चीनी भाषा में प्रकाशित पुस्तकों से अवगत कराया।

एक घंटे से अधिक समय तक चली इस बैठक में ताइवान के संसद सदस्य कुओ कू-वेन ने भी भाग लिया। सांसद ने तिब्बती आईसी पर वीजा की अवधि में तिब्बती छात्रों के सामने आने वाली कठिनाइयों को हल करने के लिए समर्थन का वादा किया। पूर्व राष्ट्रपति ने सांसद से इस मामले में अपना समर्थन और सहयोग देने का भी आग्रह किया। विचार-विमर्श के बाद प्रतिनिधि केल्सांग ग्यालत्सेन ने पूर्व राष्ट्रपति को गंगजोंग प्रिंटिंग प्रेस द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें भेंट कीं।

• ऑस्ट्रेलियाई सरकार ग्लोबल मैग्निट्स्की कानून की तरह एक नया प्रतिबंध कानून लाएगी

tibet.net, ०९ अगस्त, २०२१

०५ अगस्त को ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री मारिस पायने ने घोषणा की कि उनकी सरकार 'अंतरराष्ट्रीय मुद्दों के गंभीर कृत्यों के अपराधियों' को कानून के दायरे में लाने के लिए देश के स्वायत्त प्रतिबंध कानूनों में 'सुधार और आधुनिकीकरण' करेगी।

ऑस्ट्रेलिया के वर्तमान प्रतिबंध से 'देश-आधारित' स्वायत्त ढांचे को एक बड़ा समर्थन मिलेगा, जो वर्तमान में अन्य देशों पर केवल वित्तीय परिणामों या अन्य प्रतिबंध ही लगाता है। नया प्रस्ताव सरकार को सभी प्रकार के कृत्यों में शामिल व्यक्तियों और संस्थाओं पर प्रतिबंध लगाने की अनुमति दे देगा। इसमें यह सुनिश्चित किया जाएगा कि किन कृत्यों के लिए संबंधित व्यक्ति को व्यक्तिगत तौर पर सजा भुगतनी होगी।

आचरण संबंधी जिन विषयों पर ये प्रतिबंध लागू किए जा सकते हैं, उनमें 'सामूहिक विनाश के हथियारों का प्रसार, घोर मानवाधिकार उल्लंघन, दुर्भावनापूर्ण साइबर गतिविधि और गंभीर भ्रष्टाचार' के मामले शामिल होंगे। मंत्री ने कहा कि नए उपायों से ऑस्ट्रेलिया को 'लक्षित वित्तीय प्रतिबंध और यात्रा प्रतिबंध' लगाने का भी अधिकार मिल जाएगा। जहां भी ऐसा होता है, इस तरह के आचरण में जान-बूझकर शामिल होने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं के खिलाफ यात्रा प्रतिबंध लगाने का अधिकार सरकार के पास होगा।

यह बयान दिसंबर २०२० की विदेश मामलों की संसदीय समिति की रिपोर्ट पर सरकार की प्रतिक्रिया के हिस्से के रूप में आया, जिसमें सरकार को कानून पारित करने की सिफारिश की गई थी।

इन महत्वपूर्ण सुधारों और संसोधनों के साथ मौजूदा 'स्वायत्त प्रतिबंध अधिनियम २०११' में संशोधन इस वर्ष के अंत तक होने वाले हैं।

ऑस्ट्रेलिया में तिब्बत सूचना कार्यालय या ऑफिस ऑफ़ तिब्बत के प्रतिनिधि कर्मा सिंगे ने कहा, 'यह वास्तव में एक स्वागत योग्य कदम है कि ऑस्ट्रेलियाई सरकार अमेरिका, कनाडा और कुछ अन्य लोकतांत्रिक और स्वतंत्रता-प्रेमी देशों की तरह का मैग्निट्स्की-कानून बनाने पर विचार कर रही है और यह एक मजबूत और सीसीपी जैसे सत्तावादी शासन को स्पष्ट संदेश देनेवाला होगा।

• तिब्बती प्रतिनिधि डॉ. आर्य ने जापानी संसदीय समूहों को तिब्बत पर रिपोर्ट सौंपी

tibet.net, २६ अगस्त २०२१

टोक्यो। जापान में तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि डॉ. आर्य त्सेवांग ग्याल्पो ने २६ अगस्त को जापानी संसद भवन के हाउस ऑफ काउंसिलर्स में जापानी संसदीय समूहों द्वारा आयोजित सुनवाई के दौरान तिब्बत की वर्तमान स्थिति पर नौ पृष्ठों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

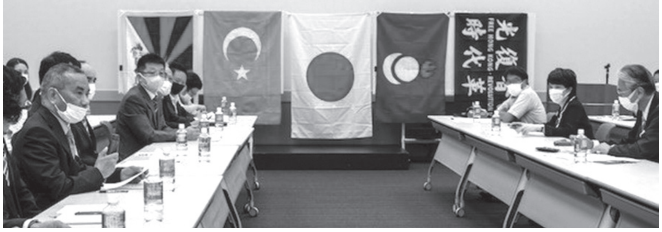

निर्वासित तिब्बती प्रशासन के प्रधिनी तिब्बत की परिस्थिति का रिपोर्ट सोपते हुए

तिब्बत, उग्यूर, दक्षिणी मंगोलिया, हांगकांग और चीनी लोकतंत्र का समर्थन करने वाले जापानी संसदीय समूहों ने आज २६ अगस्त को संसद भवन में सुनवाई का आयोजन किया था। इस दौरान इन क्षेत्रों के उत्पीड़ित लोगों के प्रतिनिधियों ने चीनी कम्युनिस्ट शासन में चल रहे अत्याचारों और अन्याय की बात बताई।

विभिन्न राजनीतिक दलों के लगभग चालीस सांसदों और उनके कर्मचारियों ने सुनवाई में भाग लिया और उपरोक्त क्षेत्रों में मानवाधिकार की स्थिति के बारे में गहराई से बातें कीं। उग्यूरों को लेकर गठित संसदीय समूह के अध्यक्ष श्री फुरुया केजी ने सुनवाई की शुरुआत करते हुए कहा कि मानवाधिकारों का उल्लंघन कहीं भी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है और जापानी संसदीय समूह इस मुद्दे पर चीन को चेतावनी देने और उसके खिलाफ बयान जारी करने के लिए मिलकर काम करेंगे।

तिब्बत के लिए गठित संसदीय समूह के अध्यक्ष श्री शिमामुरा हकुबुन ने तिब्बती मुद्दों और मानवाधिकारों के मुद्दों के लिए मजबूत समर्थन पर बात की। उन्होंने कहा कि परम पावन दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग ने जापान का दौरा किया है और जापानी संसद को संबोधित किया है। उन्होंने बताया कि तिब्बत मुद्दे का समर्थन करने वाला सबसे बड़ा संसदीय समूह जापान में ही है।

अन्य समूहों के अध्यक्षों और प्रतिनिधियों ने भी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों द्वारा मानवाधिकारों के घोर उल्लंघन पर बात की।

डॉ. आर्य ने सुनवाई में भाग लेने का मौका देने के लिए आयोजकों को धन्यवाद दिया। उन्होंने नौ पृष्ठों की रिपोर्ट प्रस्तुत की और तिब्बती पठार के तेजी से सैन्यीकरण और तिब्बती मठों और स्कूलों को बंद करने के कारण तिब्बत में गंभीर स्थिति की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कैसे चीन भारत और भूटान की सीमाओं के पास बस्तियां बसा रहा है और तिब्बतियों को जबरदस्ती इन इलाकों में बसा रहा है।

प्रतिनिधि डॉ. आर्य ने जापानी सांसदों को बताया कि कैसे तिब्बती बच्चों को मठों में प्रवेश से वंचित किया जाता है और उन्हें तथाकथित 'देशभक्ति-शिक्षा' के माध्यम से सैन्य प्रशिक्षण और शिक्षा दी जाती है। 'तिब्बत इज एन ऑक्यूपॉयड कंट्री (तिब्बत एक अधिकृत देश है)' शीर्षक वाली उनकी नौ पृष्ठों की रिपोर्ट में तिब्बत में चीन द्वारा हाल ही में किए जा रहे अत्याचारों और दमन के चित्र और समाचार भी शामिल हैं।

संसद सदस्यों ने भी अपने विचार साझा किए और चीन द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ अपना आक्रोश व्यक्त किया। तिब्बत के लिए बने संसदीय समूह के महासचिव श्री नागाओ ताकेशी ने सत्र का संचालन किया और प्रतिभागियों को उनकी रिपोर्ट और विचारों के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि सुनवाई संसद के शरद सत्र के लिए पूर्वपीठिका है, जहां चीन के मानवाधिकारों के उल्लंघन और धमकाने की रणनीति को मजबूत हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने के खिलाफ कठोर बयान दिया जा सकता है।

सुनवाई सत्र के बाद मीडिया ब्रीफिंग हुई, जिसमें डॉ. आर्य और उन क्षेत्रों के लोगों के प्रतिनिधियों ने मीडिया से बातचीत की और मीडिया को अपनी मातृभूमि की वास्तविक स्थिति से अवगत कराया।

'तिब्बतन कम्युनिटी जापान' के श्री तेनज़िन कुंगा और 'स्टूडेंट फॉर फ्री तिब्बत' के श्री त्सेरिंग दोरजी भी प्रतिनिधि आर्य के साथ थे।

• चीन में २०२२ के शीतकालीन ओलंपिक के खिलाफ स्विट्जरलैंड में साइकिल रैली

tibet.net, ३० अगस्त २०२१

स्विट्जरलैंड। स्विट्जरलैंड और लिकटेंस्टीन के तिब्बती समुदाय के सदस्यों ने चीन में २०२२ में होनेवाले शीतकालीन ओलंपिक के विरोध में एक साइकिल रैली का आयोजन किया। इस अवसर पर ८० से अधिक साइकिल चालकों

साइकिल रैली मे जुड़े स्विट्ज़रलैंड के तिब्बती समुदाय

ने आत्मदाह करनेवाले सभी तिब्बती शहीदों के सम्मान में श्रद्धावनत होते हुए २८ अगस्त, २०२१ को ज़्यूरिख शहर के मुख्य स्टेशन से चीन के वाणिज्य दूतावास तक रैली की। इस दौरान सभी साइकिल सवारों ने आत्मदाह करने वाले तिब्बतियों की तस्वीरें अपने टी-शर्ट पर चित्रित करवा रखी थीं।

चीनी कम्युनिस्ट शासन के तहत पीड़ित लोगों के लिए न्याय करने में अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति की विफलता पर निराशा व्यक्त करते हुए तिब्बती समुदाय के सदस्यों ने अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति सहित अंतरराष्ट्रीय समुदाय से चीनी कम्युनिस्ट शासन द्वारा दबाए गए लोगों की आवाज पर ध्यान देने का आह्वान किया।
.

समुदाय ने अपनी ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि तिब्बत, पूर्वी तुर्केस्तान, हांगकांग, आंतरिक मंगोलिया और चीन के अंतर्गत अन्य क्षेत्रों में व्यापक मानवाधिकार उल्लंघन के स्पष्ट सबूत के बावजूद बीजिंग में २०२२ में आयोजित शीतकालीन ओलंपिक ने अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के चार्टर की विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा कर दिया है। २००८ के बीजिंग ओलंपिक के बाद चीन ने अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों और ओलंपिक चार्टर के मूल मूल्यों को बनाए रखने के बजाय, तिब्बत और अन्य क्षेत्रों में मानवाधिकारों के हर पहलू का लगातार उल्लंघन किया है। प्रेस बयान में कहा गया है कि २००८ में ओलंपिक कराने की अनुमति पाने के लिए चीन द्वारा किए गए अधूरे वादे इस बात का स्पष्ट संकेत है कि बीजिंग में २०२२ का ओलंपिक खेल मानवाधिकारों के हनन के माहौल में होगा जो कि २००८ की तुलना में काफी खराब है।

साइकिल रैली का आयोजन २०२२ के बीजिंग शीतकालीन ओलंपिक के विरोध में स्विट्जरलैंड और लिकटेंस्टीन के तिब्बती समुदाय द्वारा अपने मासिक कार्यक्रम के हिस्से के रुप में किया गया था। समुदाय ने पिछले महीने ज्यूरिख शहर में तिब्बत में मानवाधिकारों की बिगड़ती स्थिति पर प्रकाश डालते हुए एक नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन किया था। इसके अलावा, स्विट्जरलैंड और लिकटेंस्टीन के तिब्बती समुदाय ने तीन स्विस-आधारित तिब्बत समूहों- स्विस-तिब्बती मैत्री संघ, यूरोप में तिब्बती युवा संघ और तिब्बती महिला संगठन-स्विट्जरलैंड के साथ अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के खिलाफ भी शिकायत दर्ज कराई है। इस साल की शुरुआत में बीजिंग शीतकालीन ओलंपिक खेलों के पुरस्कार पर ओईसीडी दिशा-निर्देशों का उल्लंघन करने के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने में बर्न स्थित स्विस नेशनल कांटैक्ट प्वाइंट भी शामिल हो गया है।

• भारत-अमेरिकी तिब्बत नीति विकसित हो रही है, ब्लिंकेन की बैठक इसका सबूत है

०४ अगस्त, २०२१, तेनज़िन त्सुल्त्रिम*

दलाई लामा के जन्मदिन पर मोदी के शुभकामना फोन कॉल को भी कई लोगों ने उनके पहले की नीति में बदलाव के रुप में देखा।

तेनज़िन त्सुल्त्रिम

हाल ही में अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकेन की परम पावन दलाई लामा के नई दिल्ली ब्यूरो के प्रतिनिधि न्गोदुप डोंगचुंग और तिब्बत हाउस, दिल्ली के निदेशक गेशे दोरजी दामदुल के साथ ऐतिहासिक बैठक हुई। इस बैठक ने तिब्बत के प्रति अमेरिका से निरंतर मिल रहे समर्थन के तिब्बतियों के विश्वास को और मजबूत किया है। कहा जाता है कि गेशे को तो अमेरिकी दूतावास के प्रभारी एंबेसेडर डी 'अफेयर्स अतुल केशप की अध्यक्षता में हुई एक अलग बैठक में भी आमंत्रित किया गया था।

अतीत में तिब्बती राजनीतिक मुद्दों के समर्थन में अमेरिका द्वारा पहला और खुला आधिकारिक अंतरराष्ट्रीय समर्थन १९८७ में किया गया था, जब अमेरिकी कांग्रेस के सदस्यों ने तिब्बत में मानवाधिकारों के अपमानजनक उल्लंघन की निंदा करते हुए 'स्टेट डिपार्टमेंट ऑथराइजेशन बिल' के लिए एक प्रस्ताव पेश किया था। इसे बाद में १८ जून, १९८७ को हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव द्वारा पारित किया गया।

इसके बाद अमेरिकी कांग्रेस ने २०२० में 'तिब्बत नीति और समर्थन अधिनियम' पारित किया, जिसने तिब्बत के मुद्दे के प्रति अमेरिकी प्रतिबद्धता को और मजबूत किया है। इन बैठकों ने चीन को लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति अमेरिका की प्रतिबद्धता और दलाई लामा के उत्तराधिकारी को चुनने के लिए तिब्बतियों के अधिकारों के प्रति उसके समर्थन के बारे में एक कड़ा संदेश दिया है। अमेरिका और भारत की संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस में दोनों देशों के मंत्रियों के बीच सौहार्द साफ नजर आया। प्रेस कॉन्फ्रेंस के अलावा भी, २००५ में 'नेक्स्ट स्टेप्स इन स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप (एनएसएसपी)' के पूर्ण होने के बाद से भारत और अमेरिका के बीच संबंध मजबूत हो रहे हैं। कुल मिलाकर पिछले कुछ वर्षों से अमेरिका और भारत के बीच संबंध मजबूत हो रहे हैं।

महामारी के बीच चीनी अतिक्रमण

यह सब ऐसे समय में हुआ जब दुनिया कोविड-१९ महामारी से जूझ रही है। यह संकट एक संक्रामक बीमारी के बढ़कर विश्वव्यापी महामारी हो जाने की कहानी है, क्योंकि चीन ने कोरोना वायरस के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी को रोक लिया और देश के भीतर सूचना के स्वतंत्र और निष्पक्ष प्रवाह पर लौह शिकंजा कस दिया था। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान, ब्लिंकन ने महामारी के प्रसार और मजबूत वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा की आवश्यकता को लेकर अमेरिका और भारत के बीच सहयोग के महत्व पर भी प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने दुनिया के दो सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों के बीच संबंधों की जीवंतता और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। तिब्बत के हित के लिए दोनों की ओर से मिल रहा समर्थन भी उनके साझा मूल्यों की पुष्टि करता है।

कोविड-१९ महामारी के बीच जब दुनिया का ध्यान वायरस पर लगाम लगाने पर केंद्रित था, चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के सैनिकों ने तिब्बत पर अपने कब्जे वाले क्षेत्र से भारतीय क्षेत्र में अतिक्रमण करना शुरू कर दिया। सदियों से तिब्बत भारत का एक आदर्श और प्राकृतिक पड़ोसी रहा है और हिमालय ने नालंदा, ओदंतपुरी और विक्रमशिला के महान भारतीय विहारों का दौरा करने वाले तिब्बती विद्वानों, पंडितों और योगियों के निरंतर आवागमन को देखा है। हालांकि इस मित्रवत पड़ोसी पर चीन के जबरन कब्जा कर लेने के साथ तिब्बत की धरती पर पहले के व्यापारियों और विद्वानों के विपरीत अब बंदूकधारी पीएलए ने जगह ले ली है। इन दिनों, तिब्बत में भारत से लगती सीमाओं पर सैन्यीकरण तेज हो गया है और तिब्बत के सीमावर्ती क्षेत्रों में नए गांवों, कस्बों और हवाई अड्डों का निर्माण कर इसके हर गली- नुक्कड़ को जोड़ने का प्रयास चीन द्वारा किया जा रहा है।

पिछले दिनों, डोकलाम और गालवान- दोनों में आए संकटों ने चीन के वास्तविक इरादों और उसके अक्सर टूटते हुए वादों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है।

इस साल ०६ जुलाई को दलाई लामा के जन्मदिन पर भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उन्हें शुभकामना देने के लिए किए गए फोन कॉल को कई विश्लेषकों द्वारा तिब्बत के प्रति उनके पहले के दृष्टिकोण से स्पष्ट रूप से पलटने के तौर पर देखा गया है। कुछ हफ्ते बाद, २१ जुलाई को चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने तिब्बत की राजधानी ल्हासा और अरुणाचल प्रदेश के निकट तिब्बत के एक शहर निंगची का औचक दौरा किया। शी ने चीन में सुरक्षा और स्थिरता के लिए तिब्बत के महत्व पर जोर दिया। २०१५ में आयोजित छठे तिब्बत कार्य मंच के दौरान शी ने टिप्पणी की थी कि 'किसी देश पर शासन करने के लिए उसके सीमावर्ती क्षेत्रों पर शासन करना महत्वपूर्ण है और तिब्बत की स्थिरता के लिए इसके सीमावर्ती क्षेत्रों पर नियंत्रण करना जरूरी है।'

तिब्बत में स्थिरता को बढ़ावा

शोधकर्ता एड्रियन ज़ेनज़ ने २०१८ में एक लेख में कहा है कि तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) के सभी प्रांतों और क्षेत्रों में २००८ के बाद से प्रति व्यक्ति घरेलू सुरक्षा व्यय सबसे अधिक हो रहा है। लेख में कहा गया है, '२०१६ में सिचुआन के तिब्बती क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति घरेलू सुरक्षा खर्च पूरे सिचुआन प्रांत की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक था।' इस तरह तिब्बत में स्थिरता चीन द्वारा वहां घरेलू सुरक्षा खर्च में वृद्धि पर निर्भर करता है। इसलिए शी द्वारा व्यक्तिगत रूप से तैयार किए गए १४वीं पंचवर्षीय योजना में भी तिब्बत में व्यापक परिवहन कॉरिडोर में सुधार करने की योजना है। इसलिए भारत को भी बीजिंग द्वारा शुरू किए गए इस आक्रामक विकास के बारे में सतर्क रहने की जरूरत है।

अतीत में कमजोर अंतरराष्ट्रीय समर्थन के कारण तिब्बत पर आक्रमण हुआ और भारत ने एक शांतिपूर्ण पड़ोसी को खो दिया। तिब्बत के अंदर लगातार नुकसान पहुंचाने, आक्रामक सैन्यीकरण और वहां दमनकारी नीतियों के दूरगामी प्रभाव होंगे। एक स्वतंत्र शोधकर्ता और तिब्बत नीति संस्थान के पूर्व निदेशक थुब्टेन सम्फेल ने कहा, 'एशिया के लिए तिब्बती पठार का महत्व तीन स्तरीय- भू-राजनीतिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय है। तिब्बत में चीन जो करता है या नहीं करता है, उसके शेष एशिया के लिए भू-राजनीतिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय परिणाम होते हैं।' इसलिए, भविष्य में दो सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों के बीच सहयोग एशिया और दुनिया में लोकतांत्रिक मूल्यों और सुरक्षा की स्थिति को परिभाषित कर सकता है।

*डॉ. तेनज़िन त्सुल्त्रिम तिब्बत नीति संस्थान के विजिटिंग फेलो हैं। जरूरी नहीं कि यहां व्यक्त किए गए उनके विचार तिब्बत नीति संस्थान के विचारों को प्रतिबिंबित करते हों। यह लेख मूल रूप से ०३ अगस्त २०२१ को क्विंट में प्रकाशित हुआ था।

• तिब्बत में चीन की नई नस्लीय चाल: विवाह संबंधों से एकीकरण??

क्लाउड अर्पि, asianage.com, ३० अगस्त २०२१

क्लाउड अर्पि

चीन चाहता है कि हम इस बात पर विश्वास कर लें कि उसने ७० साल पहले तिब्बत को मुक्त करा दिया था। वास्तव में ऐसा नहीं हुआ था। यह सच है कि २३ मई १९५१ को तिब्बत और चीन ने 'तिब्बत की शांतिपूर्ण मुक्ति के लिए उपायों पर समझौते' पर हस्ताक्षर किए थे, जिसे १७ सूत्रीय समझौते के रूप में भी जाना जाता है। लेकिन इसके बाद चीन ने तिब्बत पर आक्रमण कर उसे पूरी तरह से सील कर दिया न कि उसे 'मुक्त' कराया।

अपने संस्मरणों के आधार पर दलाई लामा ने कहा कि समझौता करने के लिए तिब्बती प्रतिनिधियों पर 'दबाव बनाकर' उन्हें मजबूर किया गया था, और यहां तक कि समझौते पर मुहर भी जाली थी। जब वह मार्च १९५९ में भारतीय सीमा पार कर असम के तेजपुर पहुंचे, तभी इस तिब्बती नेता ने तुरंत समझौते की निंदा की थी।

अजीबोगरीब तरह से, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने अगस्त में २३ मई की घटना को मनाने का फैसला किया। कोई नहीं जानता कि तथाकथित मुक्ति की सालगिरह २३ मई को क्यों नहीं मनाई गई या यहां तक कि जब 'कोर लीडर' शी जिनपिंग ने जुलाई में तिब्बत का दौरा किया, उस समय क्यों नहीं मनाई गई। क्या मई में लद्दाख में सीमा की स्थिति को लेकर बीजिंग घबराया हुआ था?

१९ अगस्त को बीजिंग का एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल चीनी पीपुल्स पॉलिटिकल कंसल्टेटिव कॉन्फ्रेंस के प्रमुख और पोलित ब्यूरो की स्थायी समिति के सदस्य वांग यांग के नेतृत्व में तथाकथित 'तिब्बत मुक्ति' की ७०वीं वर्षगांठ समारोह में भाग लेने के लिए ल्हासा में उतरा। श्री वांग कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व की पंक्ति में चौथे स्थान पर हैं।

श्री वांग के साथ संयुक्त मोर्चा कार्य विभाग के अल्पसंख्यकों (और विशेष रुप से तिब्बत) से संबंधित विभाग के कई अधिकारियों, जिसमें इसके मंत्री यू क्वान और मुट्ठी भर कट्टर तिब्बती कम्युनिस्ट भी हैं, के अलावा सेंट्रल सैन्य आयोग (सीएमसी) के सदस्य और सीएमसी राजनीतिक कार्य विभाग के निदेशक एडमिरल मियाओ हुआ भी थे।

हालांकि बहुत कम टिप्पणीकारों ने एडमिरल हुआ की उपस्थिति पर ध्यान दिया, लेकिन तिब्बत में निश्चित रूप से सफेद वर्दी वाले एक थ्री-स्टार एडमिरल की उपस्थिति पहली बार देखी गई। बाद में एडमिरल मियाओ तिब्बत मिलिट्री डिस्ट्रिक्ट (टीएमडी) के शक्तिशाली राजनीतिक कमिश्नर लेफ्टिनेंट जनरल झांग जुएजी के साथ एक तेज़ रफ्तार ट्रेन से नाग्चू के सुदूर, ठंडे, निर्जन उच्च-ऊंचाई वाले क्षेत्र की ओर चले गए। एडमिरल मियाओ संभवतः 'राजनीतिक कार्य' के लिए दुनिया की छत पर आए थे और जुलाई में राष्ट्रपति शी की यात्रा के दौरान अपने सहयोगी जनरल झांग यूक्सिया के साथ 'सीमा' मसले पर टीएमडी से चर्चा करने के लिए आए थे।

दुनिया की छत पर वास्तव में क्या पक रहा है?
चीनी नेतृत्व की मुख्य चिंता पीएलए में तिब्बतियों की भर्ती के लिए बड़े अभियान के अलावा, सीमाओं की 'स्थिरता' को लेकर प्रतीत होती है। पोटाला स्क्वायर से अपने भाषण में श्री वांग ने कहा, 'वर्तमान में, तिब्बत में सामाजिक स्थिति सामंजस्यपूर्ण और स्थिर है। विकास की गुणवत्ता में लगातार सुधार हो रहा है। लोगों के जीवन स्तर में व्यापक रुप से सुधार हुआ है। पारिस्थितिक सुरक्षा बाधा तेजी से खत्म हो रही है। जातीय और धर्म के पहलू सामंजस्यपूर्ण हैं। सीमा मजबूत और सुरक्षित है। पार्टी का निर्माण व्यापक रुप से मजबूत है और नया समाजवादी तिब्बत जीवंत रुप से आगे बढ़ रहा है।' हालांकि यह सब उनकी इच्छाधारी सोच हो सकती है।

भारत की सीमाओं पर 'मामूली रुप से समृद्ध' ६०५ गांवों के निर्माण के अलावा, सीमा को स्थिर करने का एक और तरीका हान मूल के चीनियों और तिब्बतियों के बीच अंतर-नस्लीय विवाह है। पिछले ७० वर्षों में इस तरह की घटनाएं दुर्लभ रही हैं। क्योंकि तिब्बती हमेशा अपनी 'अस्मिता' के खो जाने के डर से इस तरह के विवाह संबंधों के प्रति अनिच्छुक रहे हैं। लेकिन इससे ऐसा लगता है कि अब यह प्रवृत्ति बदल रही है।

मार्च १९५५ में भारतीय विदेश मंत्रालय को अपनी रिपोर्ट में सिक्किम के राजनीतिक अधिकारी आपा पंत ने लिखा था कि सिक्किम के पास चुंबी घाटी में लोगों का उपयोग चीन द्वारा तिब्बतियों का दिल जीतने के प्रयास के तौर पर किया गया था। इस रिपोर्ट में उन्होंने इसके तहत अंतर नस्लीय विवाह का उल्लेख किया। उन्होंने लिखा, 'तिब्बत और चीन के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित करने की नीति के विभिन्न पहलुओं को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इनमें से एक चीनी-तिब्बतियों के बीच वैवाहिक संबंध है। यहां तक कि कई बार प्रचार के माध्यम से इस तरह के विवाह संबंधों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।' हालांकि उन्होंने लिखा है कि इसे लेकर कई तिब्बतियों में डर था। चीनी सबसे योग्य तिब्बती लड़कियों से शादी करेंगे और चीन-तिब्बती लोगों की एक नई पीढ़ी का निर्माण करेंगे जो चीन के प्रति गहरा भावनात्मक समर्थन रखेंगे।' हालांकि, १९५९ में दलाई लामा के भारत में शरण लेने के बाद इस प्रकार के अंतर-नस्लीय विवाह व्यावहारिक रुप से बंद हो गए।

लेकिन जैसा कि 'चाइना डेली' अखबार में एक लेख में कहा गया है, 'अब स्थिति बदल गई है। हान-तिब्बती जोड़े क्षेत्र में एकता और प्रेम की मिशाल कायम कर रहे हैं।' अखबार ने जुलाई में तिब्बत में स्थानीय अधिकारियों के साथ बातचीत के दौरान शी जिनपिंग के हवाले से उनके कई उद्धरण प्रकाशित किए। जैसे, 'सीमा क्षेत्र रक्षा की पहली पंक्ति है और राष्ट्रीय सुरक्षा का घेरा है। हमें सीमा के बुनियादी ढांचे के निर्माण को मजबूत करना चाहिए। सभी नस्लीय समूहों के लोगों को सीमा पर जड़ें जमाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। देश की रक्षा करनी चाहिए और अपने गृहनगर का निर्माण करना चाहिए।'

चीनी अखबार ने ध्यान दिलाया कि, 'आधिकारिक आंकड़ों से पता चलता है कि तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में ४० से अधिक नस्लीय अल्पसंख्यक रहते हैं और ३६.४ लाख की आबादी में तिब्बती निवासियों की संख्या ९० प्रतिशत से अधिक है। आजकल, तिब्बत में विभिन्न नस्लीय पृष्ठभूमि के सदस्यों वाले परिवार काफी आम हैं।' हालांकि यह सच है या नहीं, कहना मुश्किल है।

पार्टी का अखबार ऐसे चार जोड़ों का उदाहरण देता है। उसके अनुसार, हान-तिब्बती अंतरनस्लीय-विवाह 'विकास के इस नए युग में नस्लीय एकता का महान प्रदर्शन' है।

क्या यह २०२५ में होने वाले अगले तिब्बत वर्क फोरम से पहले लागू होने वाली सरकारी नीति है? ये निर्णय (जैसे पीएलए में तिब्बतियों की अनिवार्य भर्ती) आमतौर पर पूरी तरह से लागू होने तक गुप्त रहते हैं।

कुछ महीने पहले, सरकारी समाचार एजेंसी 'शिन्हुआ' ने इस मुद्दे को उठाया था, 'आंकड़ों के अनुसार, मेटोक (अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी सियांग के पास) में ५६० से अधिक बहु-नस्लीय परिवार हैं। विभिन्न नस्लीय समूहों के लोग खेती और पशुपालन में एक-दूसरे की मदद करते हैं और विभिन्न नस्लीय समूहों के बच्चे एक ही कक्षा में पढ़ते हैं। यहां लोग नए साल का दिन, चंद्र नव वर्ष, तिब्बती नव वर्ष या मोनपा नस्लीय समूह के लोक सांस्कृतिक उत्सव मनाते हैं।'

सरकारी समाचार एजेंसी ने झांग चुनहुआन और उनके परिवार द्वारा चीनी नव वर्ष मनाने के मामले को उजागर करते हुए लिखा है, 'आठ साल पहले, शांक्सी प्रांत का एक युवक झांग चुनहुआन मेटोक आया था। उस समय हिमालय के दक्षिणी तल पर स्थित काउंटी में यातायात असुविधाजनक थी। झांग को दैनिक जरुरत का सामान खरीदने के लिए टाउनशिप से काउंटी सीट तक कुछ तीन-चार घंटे पैदल चलना पड़ता था। झांग ने याद किया कि उसने कभी भी यहां अपना घर बनाने की योजना नहीं बनाई।'

ये स्पष्ट रुप से कई और तिब्बतियों द्वारा अनुकरण किए जाने वाले मॉडल मामले हैं। बीजिंग इससे हिसाब-किताब लगा रहा है कि यदि हजारों तिब्बती लड़कियां चीनी प्रवासियों से शादी करती हैं (उदाहरण के लिए, जो सीमा पर मेगा बुनियादी ढांचा विकास परियोजनाओं पर काम करने के लिए आते हैं), तो एक मुद्दा हमेशा के लिए बदल जाएगा। इससे भविष्य में तिब्बत के फिर से तिब्बत बनने का मौका नहीं मिल पाएगा।

नई दिल्ली और धर्मशाला में निर्वासित तिब्बती सरकार दोनों को इस मुद्दे को गंभीरता से लेना चाहिए, अन्यथा उत्तर भारत में सीमावर्ती क्षेत्रों में रहनेवाले भारतीय नागरिकों को जल्द ही नए पड़ोसियों का सामना करना पड़ेगा, इसके परिणाम भी उन्हें भुगतने होंगे।

यह पीएलए में तिब्बतियों की भर्ती से अधिक जटिल और गंभीर मुद्दा है। इसका मतलब है कि सीमा को 'स्थिर' करने के साधनों पर निश्चित रूप से टीएमडी जनरलों के साथ एडमिरल मियाओ हुआ ने चर्चा की होगी।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Jigmey Tsultrim
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

जिगमे त्सुलट्रिम
समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578, 29840968
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

साइकिल रैली मे जुड़े स्विट्ज़रलैंड के तिब्बती समुदाय

पांवटा साहिब में तिब्बती सदस्यों के साथ तिब्बत समर्थक समूहों